भण्डारण भारती

अंक–58

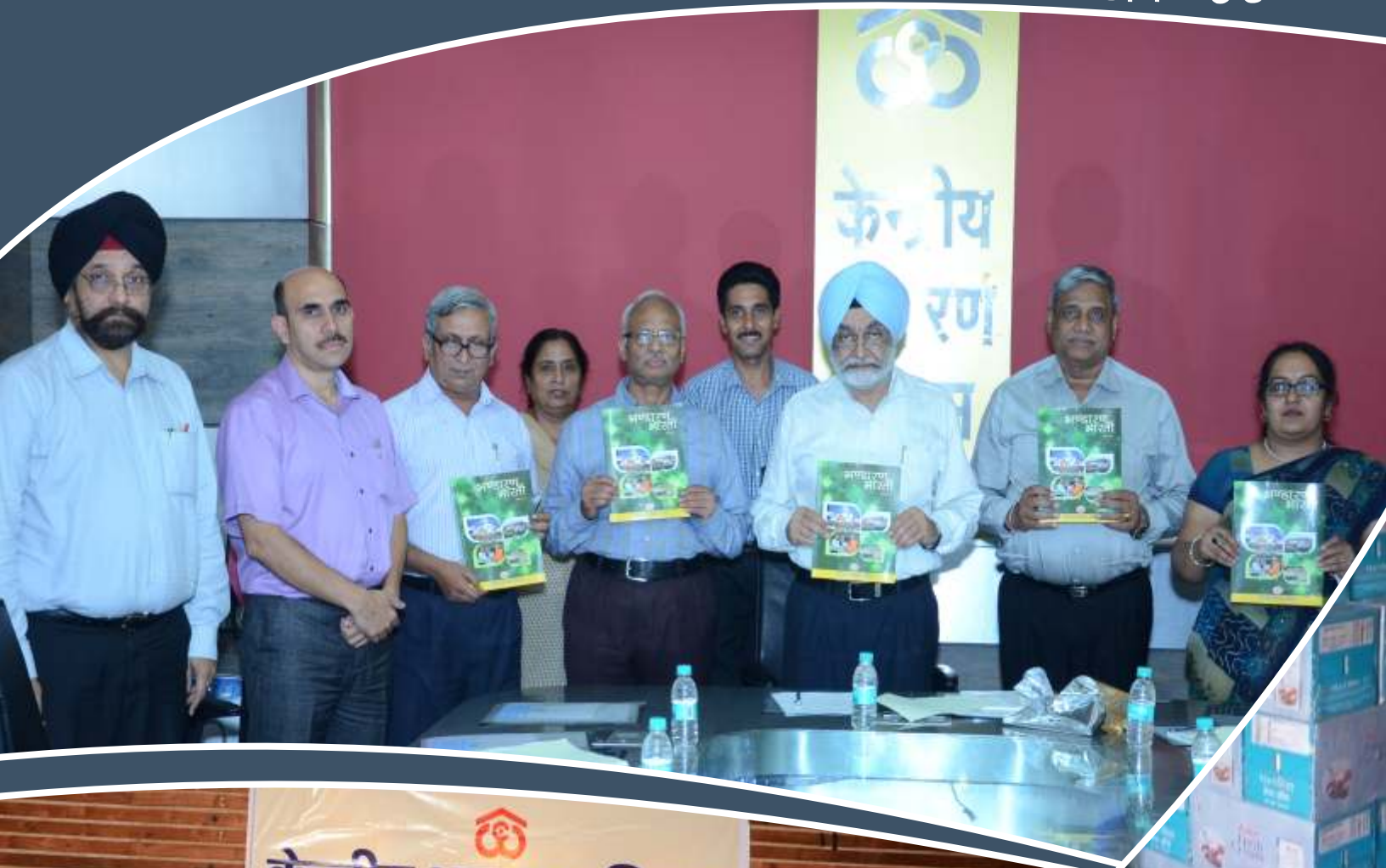

केन्द्रीय भण्डारण निगम

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

आप अपना भविष्य नहीं बदल सकते,
पर अपनी आदतें तो बदल सकते हैं, और
बदली हुई आदतें आपका भविष्य बदल देंगी।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

आत्मविश्वास और कड़ी मेहनत असफलता नामक
बीमारी को मारने के लिए सबसे बढ़िया दवाई है,
ये आपको एक सफल व्यक्ति बनाती है।

जुलाई–सितंबर, 2015

मुख्य संरक्षक
हरप्रीत सिंह
प्रबन्ध निदेशक

संरक्षक
जे. एस. कौशल
निदेशक (कार्मिक)

परामर्शदाता
अनिल कुमार शर्मा
महाप्रबन्धक (कार्मिक)

मुख्य संपादक
नम्रता बजाज
प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक
महिमानन्द भट्ट
वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

उप संपादक
रजनी सूद, रेखा दुबे

सहायक संपादक
प्रकाश चन्द्र मैठाणी

संपादन सहयोग
संतोष शर्मा, नीलम खुराना,
शशि बाला, विजयपाल सिंह

केन्द्रीय भण्डारण निगम
(भारत सरकार का उपक्रम)
4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया, हौज खास, अगस्त क्रान्ति मार्ग, नई दिल्ली-110016

यह पत्रिका निगम की वेबसाइट
www.cewacor.nic.in
पर भी उपलब्ध है।

मुद्रक: **विबा प्रेस प्रा. लि.**, सी-66/3, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली-110020

भण्डारण भारती

त्रैमासिक पत्रिका अंक-58

	विषय	पृष्ठ संख्या
➲	प्रबंध निदेशक की कलम से	03
➲	संपादकीय	04
आलेख		
➢	विज्ञान के प्रचार-प्रसार से जुड़े..... – सुभाष चंद्र लखेड़ा	05
➢	हिन्दी : हर भारतीय की पहचान – राकेश सिंह परस्ते	11
➢	प्रोत्साहनः सफलता हेतु एक सराहनीय..– वरूण भारद्वाज	22
कविताएं		
❋	इन्सानियत – संजीव कुमार साहू	07
❋	बेरोज़गारी – हरिमोहन	19
❋	बेटियाँ... – मनीषा पी.सोनी	23
❋	ताजमहल – मोहिनी मल्होत्रा	23
❋	परिंदे – विनीत निगम	25
❋	प्याज का छिलका – मिश्री लाल मीना ''एकलव्य''	29
❋	मेरी आवाज़ सुनो – नेत्रपाल शर्मा	29
❋	जुबान – देवराज सिंह 'देव'	36
संस्मरण		
❍	सुनहरे पलों का यादगार सफ़र – महिमानन्द भट्ट	08
साहित्यिकी		
❧	उसने कहा था (कहानी)	13
विविध		
♦	दूसरों को बदलने से पहले अपने को बदलो – संतोष शर्मा	24
♦	भौतिक विकास और गिरते नैतिक मूल्य – नम्रता बजाज	26
♦	अच्छाई अभी ज़िंदा है ... – रेखा दुबे	30
अन्य गतिविधियां		
☆	सचित्र समाचार	31
☆	सचित्र गतिविधियां	32
☆	खेल समाचार – राजीव विनायक	37
☆	निगम का तुलनात्मक कार्य-निष्पादन एवं प्रशिक्षण.....	38
☆	सेवानिवृति के अवसर पर...	39

संपादक मंडल का लेखकों के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नहीं।

केन्द्रीय भण्डारण निगम

लक्ष्य, दूरदर्शिता एवं उद्देश्य

लक्ष्य

सामाजिक दायित्वपूर्ण एवं पर्यावरण–अनुकूल ढंग से विश्वसनीय, किफायती, मूल्य संवर्द्धक तथा एकीकृत भण्डारण एवं लॉजिस्टिक्स समाधान सुलभ कराना।

दूरदर्शिता

हितधारी की संतुष्टि पर बल देते हुए भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था के सम्बल के रूप में एकीकृत भण्डारण अवसंरचना एवं अन्य लॉजिस्टिक सेवाएं प्रदान करने वाले बाजार के एक अग्रणी संसाधक के रूप में खड़ा होना।

उद्देश्य

- वैज्ञानिक भंडारण एवं संबंधित अवसंरचनात्मक सुविधाएं उपलब्ध कराते हुए कृषि, उद्योग, व्यापार व अन्य क्षेत्रों की परिवर्तनशील आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
- भंडारण, हैण्डलिंग एवं वितरण के दौरान होने वाली हानियों को कम करना।
- पर्यावरण अनुकूल विधियां प्रयोग करते हुए पैस्ट नियंत्रण सेवाओं के क्षेत्र में प्रमुख भूमिका निभाना।
- बैंकिंग संस्थाओं एवं गैर बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों के माध्यम से भण्डारित वस्तुओं के लिए ऋण उपलब्ध कराने की दिशा में भण्डारण (विकास एवं विनियमन) अधिनियम, 2007 के क्रियान्वयन में सहयोग करना।
- पोर्ट हैण्डलिंग, प्रापण एवं वितरण, कोल्ड चेन, भण्डारण वित्त पोषण, 3 पी०एल०, परामर्शी सेवाएं, मल्टीमॉडल परिवहन आदि के क्षेत्रों में फारवर्ड और बैकवर्ड इंटीग्रेशन द्वारा लॉजिस्टिक्स वेल्यू चेन की योजना बनाना और उनमें विविधता लाना।
- भण्डारण और लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में वैश्विक उपस्थिति दर्ज करना।
- ग्राहक संतुष्टि हेतु कर्मचारियों की प्रतिबद्धता, अभिप्रेरणा और उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से मानव संसाधन विकास कार्यक्रम बनाना व क्रियान्वित करना।

प्रबंध निदेशक की कलम से....

त्रैमासिक पत्रिका ^HkMkj.k Hkkjrh* का नवीनतम अंक आपको सौंपते हुए मुझे अत्यंत खुशी हो रही है। इस पत्रिका के माध्यम से हम राजभाषा हिन्दी को प्रोत्साहित करने के साथ–साथ निगम की गतिविधियों, उपलब्धियों, योजनाओं तथा कारोबार के क्षेत्र से संबंधित जानकारी को अधिकारियों एवं कर्मचारियों सहित सभी पाठकों तक पहुंचाने का प्रयास करते हैं। यह प्रसन्नता का विषय है कि पत्रिका अपने उद्देश्यों को पूरा करते हुए निरंतर नए सोपान की ओर अग्रसर है जिसके परिणामस्वरूप हाल ही में नराकास (उपक्रम), दिल्ली द्वारा ^Hk.Mkj.k Hkkjrh* को वर्ष 2014–15 के लिए श्रेष्ठ गृह पत्रिका का f}rh; ijLdkj प्रदान किया गया है।

जैसा कि हम जानते हैं कि निगम खाद्यान्नों के सुरक्षित भंडारण और उनकी आपूर्ति के साथ–साथ भंडारण की वैज्ञानिक तकनीकों के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। निगम का कार्य–निष्पादन लगातार बढ़ रहा है जिसके कारण हमने कई क्षेत्रों में नई ऊँचाइयाँ भी हासिल की हैं। निगम के निवल लाभ में वर्ष 2013–14 की तुलना में वर्ष 2014–15 में 13% की वृद्धि होने के साथ ही इंलैण्ड कंटेनर डिपो, इंटीग्रेटिड चैक पोस्ट, पैस्ट कंट्रोल सर्विसेज़, लैंड कस्टम स्टेशनों आदि का निष्पादन भी बढ़ा है, इससे निगम के राजस्व में वृद्धि हुई है।

सितंबर माह में निगम के अंशधारियों की वार्षिक साधारण बैठक का आयोजन किया गया जिसमें अध्यक्ष महोदय द्वारा निगम की वार्षिक पत्रिका ^^fgUnh Lekfjdk** का विमोचन किया गया। इस पत्रिका में अंशधारियों की रचनाओं को भी प्रकाशित किया गया है। मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि वर्ष 2014–15 में निगम के बोर्ड ने गत वर्ष के 48% की तुलना में प्रदत्त पूंजी का 54% लाभांश देने की सिफारिश की। इसके अतिरिक्त, निगम किसानों की सेवा में सदैव ही आगे रहा है। इस दिशा में आगे बढ़ते हुए हमने 06 बैंकों के साथ समझौता करार (एम ओ ए) किया है ताकि किसान निगोशिएबल वेअरहाउस रसीद की सुविधा का अधिक से अधिक लाभ उठा सकें।

निगम ने अपने व्यावसायिक हितों तथा निगमित सामाजिक दायित्वों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किए हैं। इन सभी गतिविधियों के साथ–साथ निगम राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग बढ़ाने के लिए भी निरंतर प्रयत्नशील है। इसी क्रम में हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी सितंबर माह में निगमित कार्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालयों में fgUnh i[kokM+k का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अत्यंत उत्साहपूर्वक भाग लिया। निगमित कार्यालय में वर्ष के दौरान राजभाषा में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन करने वाले 06 विभागों को jkt Hkk"kk 'khYM भी प्रदान की गई जो राजभाषा को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक सराहनीय प्रयास है। इस संबंध में मेरा सुझाव है कि हम इसे केवल हिंदी पखवाड़े तक सीमित न रखें अपितु दैनिक कार्यों में भी राजभाषा का अधिकाधिक इस्तेमाल करें। इसके अलावा केवल अनुवाद पर निर्भर न रहकर मूल रूप से सरल और सहज हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने का प्रयास जारी रखें।

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा राजभाषा हिंदी की प्रगति का जायजा लेने के उद्देश्य से दिनांक 03.09.2015 को क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरू एवं दिनांक 29.09.2015 को क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली का jkt Hkk"kk fujh{k.k किया गया। माननीय समिति ने इन कार्यालयों में किए जा रहे राजभाषा कार्यों की समीक्षा की और भविष्य में राजभाषा के प्रयोग में गति लाने के सुझाव भी दिए। मेरा निगम के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आग्रह है कि राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने की दिशा में अपने–अपने स्तर पर सभी अपेक्षित कार्रवाई सुनिश्चित करें ताकि सरकारी अपेक्षाओं के अनुसार निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

मुझे विश्वास है कि सभी अधिकारी एंव कर्मचारी पूरी लगन, परिश्रम, कर्त्तव्यनिष्ठा, एकजुटता और पूर्ण समर्पण की भावना से निगम को सफलता के शिखर पर पहुँचाने के लिए कार्य करेंगे ताकि हम सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल कर सकें।

¼gjihr flag½
प्रबंध निदेशक

संपादकीय

निगम की त्रैमासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन सभी पाठकों के लिए प्रसन्नता की बात है। वास्तव में यह पत्रिका अधिकारियों और कर्मचारियों को सरकारी कामकाज के दौरान अपनी लेखन प्रतिभा उजागर करने के लिए एक मंच प्रदान करती है। अपनी परम्परा के अनुसार इस अंक में भी हमने सभी स्थाई स्तंभों सहित विभिन्न राजभाषा गतिविधियों अर्थात् हिंदी दिवस एवं कार्यशाला के फोटोग्राफ प्राथमिकता के आधार पर प्रकाशित किए हैं।

यह हर्ष की बात है कि ^^HkaMkj.k Hkkjrh^^ पत्रिका निरंतर नराकास से पुरस्कृत हो रही है जिससे हमारे निगम का गौरव भी बढ़ा है। वर्ष 2014–15 के लिए भी इस पत्रिका को श्रेष्ठ पत्रिका का f}rh; iqjLdkj प्रदान किया गया है, जिसमें इस पत्रिका से जुड़े सभी पाठकों का योगदान है।

जैसा कि सभी सुधी पाठकों को मालूम है कि ''भंडारण भारती'' पत्रिका में निगम के कार्यकलापों सहित विभिन्न गतिविधियों की जानकारी प्रकाशित की जाती है, इसके मद्देनजर हमने विभिन्न गतिविधियों को समाहित करते हुए इस अंक में भी निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनाओं को विशेष स्थान दिया है।

हमारा यह भी उद्देश्य रहा है कि पत्रिका के सभी लेखकों को प्रोत्साहित किया जाए। हमें खुशी है कि निगम में नए भर्ती हुए अधिकारी और कर्मचारी अपनी रचनाओं के माध्यम से इस पत्रिका की शोभा बढ़ा रहे हैं। नए लेखकों की रुचि को देखते हुए हमें आशा है कि भविष्य में भी 'भंडारण भारती' पत्रिका अपने उद्देश्यों के अनुरूप गौरवशाली स्थान प्राप्त करेगी।

¼uerk ctkt½
प्रबंधक (राजभाषा)

विज्ञान के प्रचार-प्रसार से जुड़े कुछ बुनियादी सवाल

* सुभाष चंद्र लखेड़ा

भारत में विज्ञान का प्रचार–प्रसार सरकारी हाथों में है। यहां निजी क्षेत्र की भागेदारी नहीं के बराबर है। कुछ निजी क्षेत्र के उद्योग धंधों में अनुसंधान के नाम पर कुछ काम अवश्य होता है किन्तु उसका संबंध विज्ञान के प्रसार से नहीं है। उसका संबंध तो सिर्फ विज्ञान से पैसा कमाने तक सीमित रहता है। अब सवाल उठता है कि सरकारी क्षेत्र विज्ञान के प्रचार–प्रसार में कितना प्रभावी है? विशेषकर, आजादी के बाद इस क्षेत्र में कितना कार्य हुआ और उसका हमारे समाज की दशा और दिशा को सुधारने में क्या भूमिका रही है?

इन सवालों का जवाब खोजने के लिए जरूरी है कि हम ऐसे सभी सरकारी विभागों के बारे में पहले संक्षेप में चर्चा कर लें जिनसे हम विज्ञान के प्रचार – प्रसार की अपेक्षा रखते हैं। इनमें सर्वोपरी स्थान भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय का है। बहरहाल, भारत सरकार में यूं तो कोई भी ऐसा मंत्रालय या विभाग नहीं है जिसका रिश्ता कहीं न कहीं विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और इसके प्रचार–प्रसार से न हो किन्तु ऐसे मंत्रालयों की संख्या भी कम नहीं है जिनका संबंध सीधे तौर पर विज्ञान के सृजन और उसके प्रचार–प्रसार से है। नवीन एवं अक्षय ऊर्जा मंत्रालय, मानव संसाधन विकास और दूरसंचार एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, कृषि मंत्रालय, खाद्य प्रसंस्कृत मंत्रालय, पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय, भू–विज्ञान मंत्रालय, जल संसाधन मंत्रालय, रक्षा मंत्रालय, वन एवं पर्यावरण मंत्रालय, खेल एवं युवा मंत्रालय, शिक्षा मंत्रालय, सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय और, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय को इस सूची में शामिल कर सकते हैं। इसके आलावा परमाणु ऊर्जा विभाग एवं अंतरिक्ष विभाग का संबंध भी विज्ञान के प्रसार से जुड़ा है। इन सभी मंत्रालयों एवं विभागों के तहत अनेक ऐसी संस्थाएं एवं प्रयोगशालाएं हैं जिनका कार्य विज्ञान का सृजन एवं प्रसार करना है। उदाहरण के लिए रक्षा मंत्रालय का 'रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन', कृषि मंत्रालय का 'भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्', स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय से संबंधित 'भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्', और भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा पोषित 'वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद्' ऐसे प्रमुख वैज्ञानिक संगठन हैं जिनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे सतत रूप से विज्ञान का प्रसार करते रहेंगे।

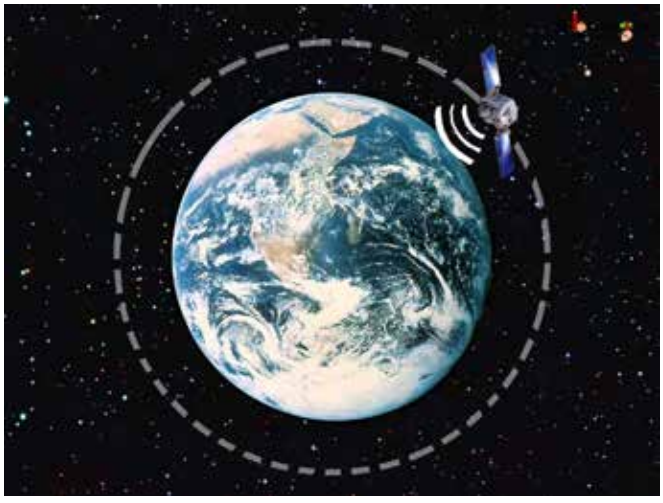

यद्यपि ऐसे सभी संगठन आजादी से पहले भी हमारे यहाँ किसी न किसी रूप में मौजूद थे किन्तु आजादी के बाद देश की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए इन सभी में व्यापक रद्दोबदल किये गए ताकि ये भारत को वैज्ञानक और प्रौद्योगिकी दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने में मददगार हो सकें। रक्षा अनुसन्धान एवं विकास संगठन की स्थापना वर्ष 1958 में हुई। सम्प्रति, इसके अंतर्गत 52 प्रयोगशालाओं का एक नेटवर्क है जो देश की रक्षा जरूरतों के मुताबिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी से जुड़े विभिन्न विषयों पर अनुसंधान एवं विकास के कार्यों में लगी हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के अंतर्गत 97 संस्थान और 47 कृषि विश्वविद्यालय हैं। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसन्धान परिषद् की स्थापना वर्ष 1949 में हुई और इस समय इसके तहत 30 प्रयोगशालाएं और छह क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केंद्र हैं। जहां तक वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद् का सवाल है, इसकी 39 प्रयोगशालाएं

*पूर्व वरिष्ठ वैज्ञानिक, सी–180, सिद्धार्थ कुंज, सैक्टर–7, प्लाट नं. – 17, नई दिल्ली

एवं 50 फील्ड स्टेशन हैं। इसको विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में अनुप्रयुक्त अनुसंधान तथा उसके परिणामों के उपयोग पर बल देते हुए अनुसंधान एवं विकास परियोजनाएं शुरू करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

इन संस्थानों/संगठनों के अलावा विज्ञान के प्रसार के लिए हमारी सरकार ने अलग से भी कुछ संस्थान बनाये हैं जिनका कार्य प्रत्यक्ष रूप से विज्ञान का प्रसार करना तो नहीं है किन्तु इस कार्य में सहायता पहुंचना है। हम सभी जानते हैं कि आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी को आत्मसात किए बिना कोई भी भाषा राष्ट्र की संपूर्ण जरूरतों को पूरा नहीं कर सकती है. केंद्र सरकार ने इस बात को समझते हुए हिंदी में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्द मुहैय्या करवाने के लिए 'वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग' का गठन किया। आज आयोग द्वारा किए गए परिश्रम के बदौलत हिंदी में ऐसे शब्दों का विपुल भंडार उपलब्ध है। सभी जानते हैं कि इन शब्दों का उपयोग वैज्ञानिक और तकनीकी लेखन में होना है ताकि विज्ञान का प्रसार आम जन तक किया जा सके। इतना ही नहीं, हमारे सरकारी वैज्ञानिक संगठनों ने कुछ ऐसे स्वतंत्र संस्थान भी बनाये हैं जिनका कार्य सिर्फ और सिर्फ विज्ञान का प्रसार करना है। ऐसी प्रमुख संस्थाओं में राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद्, विज्ञान प्रसार, राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना संसाधन संस्थान, राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद् और नेहरु तारामंडल जैसे संस्थान/इकाइयां शामिल हैं।

बहरहाल, यह एक कटु सत्य है कि सारे ताम–झाम के बावजूद हमारे सरकारी क्षेत्र विज्ञान का उतना प्रसार नहीं कर पायें हैं जितने की उनसे अपेक्षा थी। यहां मैं विज्ञान परिषद् प्रयाग, इलाहाबाद की चर्चा करना चाहूंगा। वर्ष 1913 में स्थापित इस संस्था ने विज्ञान की जानकारी को आम जन तक पहुंचाने के लिए अब तक जितना कार्य किया है, वह सरकारी विभागों और मंत्रालयों के लिए सबक हो सकता है। सरकारी विभागों ने विज्ञान प्रसार के कार्य को उसी तरह से किया जैसे कोई सरकारी बाबू पानी अथवा बिजली के बिल जमा करता है। दरअसल, विज्ञान सृजन की तरह विज्ञान प्रसार का काम भी एक मिशन के रूप में लिया जाना चाहिए। हमारे सरकारी संस्थानों ने विज्ञान प्रसार संबंधी पुस्तकें छापी तो हैं किन्तु वे छपने के बाद आम जनता को नहीं पहुंचाई गयी। सरकारी क्षेत्र में आज तक जो भी लोकप्रिय विज्ञान पत्रिकाएं छप रही हैं, उनका वितरण किसी ऐसे अधिकारी के हाथ में होता है जिसका पत्रिका के प्रकाशन से कोई तालुक नहीं होता है। फलस्वरूप, पत्रिकाएं छपने के बाद भी गोदामों में पड़ी रहती हैं। विभिन्न मंत्रालयों से जुड़े वैज्ञानिक संगठनों के तहत आने वाली सभी प्रयोगशालाएं जो गृह पत्रिकाएं छापती हैं, उनमें विज्ञान संबंधी सामग्री बहुत कम होती है। जो थोड़ी बहुत विज्ञान संबंधी सामग्री उनमें मौजूद रहती है, अक्सर उसे देखकर यही लगता है कि लिखने वाले ने उसे शायद मजबूरी में या किसी दबाव में लिखा है। यदि कोई उत्कृष्ट विज्ञान लेख उसमें छपा भी हो तो उसके लेखक को कहीं से कोई ऐसा प्रोत्साहन नहीं मिलता है जिससे उसमें वह भावना बलवती हो जो किसी वैज्ञानिक को लोकप्रिय विज्ञान लेखन के लिए प्रेरित करती है।

मैं अपने दीर्घकालिक अनुभव के आधार पर यह निसंकोच कह सकता हूं कि हमारे देश में मौजूद सैकड़ों प्रयोगशालाओं में अपवाद स्वरुप एक या दो ऐसी प्रयोगशालाएं हो सकती हैं जहां इस बात पर गंभीरता से विचार होता हो कि विज्ञान का प्रसार कैसे किया जाये? घड़ी देख कर नौकरी करने वाले लोगों से इस तरह की आशा रखना व्यर्थ है। यूं ऐसे लोग भी आपको इन वैज्ञानिकों के बीच मिल जायेंगे जो घड़ी देख कर नौकरी नहीं करते हैं किन्तु ऐसा वे विज्ञान के सृजन या प्रसार के लिए नहीं अपितु अपने प्रचार–प्रसार के लिए करते हैं ताकि वे समय से पहले प्रोन्नति पाते रहें। ऐसे लोग देश और समाज का अपेक्षाकृत अधिक नुकसान करते हैं। ये अक्सर समाज को गलत जानकारी परोसते हैं और आंकड़ों से खिलवाड़ कर अपने वरिष्ठ अधिकारियों को गुमराह करते हैं और कई बार तो पूरे देश को गुमराह करते हैं। मुझे एक ऐसी बात याद आ रही है जिसे मैंने वर्ष 1972–73 के दौरान सुना था। एक वैज्ञानिक ने जीन संबंधी अनुसंधान हेतु एक परियोजना पर कार्य करने की इच्छा अपने किसी ऐसे अधिकारी से जताई जो प्रशासनिक सेवा से तालुक रखते थे। वे अधिकारी तपाक से बोले, 'जीन तो अपने कपड़ा मिलों में वर्षों से बनाई जा रही है, तुम इस पर क्यों सर खपाना चाहते हो।' हो सकता है यह किस्सा

किसी की कल्पना की उपज हो किन्तु इससे मिलते–जुलते किस्से अक्सर सुनने में आते हैं।

राष्ट्र की प्रगति के लिए विज्ञान सृजन और उसका प्रसार, दोनों ही बेहद जरूरी हैं। हम जिस वैज्ञानिक चेतना की बात करते आए हैं, वह तभी संभव है जब हम सरकारी और गैर सरकारी, दोनों स्तरों पर विज्ञान की जानकारी उस आम आदमी तक पहुंचाएं जिसके आंसू पोंछने का स्वप्न बापू ने देखा था। इसमें तनिक भी संदेह नहीं होना चाहिए कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी की मदद से हम गरीबी से निजात पा सकते हैं और एक ऐसे भारत का निर्माण कर सकते हैं जिसकी सोच आधुनिक और प्रगतिशील हो। यह खेद की बात है की हमारे वैज्ञानिक जिस भाषा में बात करते हैं, वह आम भारतीयों की भाषा नहीं होती। वे जिन मुद्दों पर परियोजनाएं लेते हैं उनका संबंध भारतीय समस्याओं से नहीं होता और वे स्वदेश के बजाए विदेश के जर्नलों में अपने कार्यों का विवरण छपवाना चाहते हैं। वे सिर्फ एक ही बात दोहराते मिलेंगे, 'हमारे जर्नल अंतरराष्ट्रीय स्तर के नहीं हैं।'

ऐसे लोग क्या यह बताने की कृपा करेंगे कि हमारे जर्नलों का स्तर कैसे बेहतर हो सकता है? अगर हमारे देश को तरक्की करनी है तो उसके लिए किसी विदेशी को नहीं अपितु हमें ही कठिन परिश्रम करना होगा। अगर हमें अपने जर्नलों को बेहतर बनाना है तो हमें अपने अच्छे शोध पत्र और रिव्यू आलेख उनमें छापने होंगे। हम इस तथ्य से परिचित हैं कि विदेशी जर्नल महंगे होने के कारण हमारे विद्यालयों के पुस्तकालयों तक नहीं पहुंच पाते हैं। फलस्वरूप, हमारे छात्र विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रहे नवीनतम कार्यों से परिचित नहीं हो पाते हैं। सरकार को अब अविलम्ब ऐसे सभी कदम उठाने होंगे जो विज्ञान प्रसार के कार्य को वह गति प्रदान कर सकें जो वर्ष 2020 में न सही, वर्ष 2030 तक हमें एक विकसित राष्ट्र का दर्जा दिलाने में सहायक हो सकते हैं।

और अंत में यहां यह उल्लेख करना चाहूंगा की अगर हमें विज्ञान का प्रसार करना है तो उसमें हमारे मीडिया की भूमिका भी सकारात्मक होनी चाहिए। हमारा प्रिंट और इलेक्ट्रोनिक मीडिया विज्ञान के प्रसार के बजाए अंधविश्वासों पर आधारित सामग्री को परोसने में रुचि रखता है। वे वैज्ञानिकों के बजाए पोंगा पंडितों और कठमुल्लाओं को वरीयता देते हैं। निर्मल बाबा और तथाकथित राधे मां की चर्चा से समाज और देश का कोई लाभ नहीं होने वाला है। हमारे मीडिया में जादू–टोने के विज्ञापन जिस बेशर्मी से छापे जाते हैं, उसे देखकर यह कतई महसूस नहीं होता है कि हम इक्कीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक के पांचवे वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं!

इन्सानियत

*lrho dekj lkg

हाथों में मशाल दिलों में सवाल लिए हम चले जा रहें हैं,
क्या गलत, सही क्या है जाने बिना हम बढ़े जा रहे हैं।
इन्सानों के बनाए धर्म और जाति के नाम पर,
हम उस खुदा की बनाई इन्सानियत का
हर वक्त कत्ल किये जा रहे हैं।

ये हिन्दू, ये मुस्लिम वो सिक्ख और इसाई,
कभी थे आपस में सब भाई–भाई,
हर मजहब ने हमें सिर्फ इन्सानियत सिखाई,
फिर क्यूं इनके नुमाइन्दों ने धर्म के नाम पर,
हमारे दिलों की दूरियां बढ़ाईं।

ना राम, ना पैगम्बर, ना गुरू गोविन्द ना तो ईशू ने
धर्म के नाम पर किसी की जान लुटाईं।
अपनी हर लड़ाई से तो बस इन्सानियत की लाज बचाई,
आज हम उनके नाम पर
हर रोज कत्ले आम किए जा रहे हैं।

खुद के भीतर छुपे शैतान को हम,
जिहाद का नाम दिए जा रहे हैं,
अभी भी वक्त है यारों, संभल जाओ,
खुदा के पास जाने से पहले
उनके पैगाम का अर्थ समझ जाओ,
जो जिन्दगी हमें मिली है इन्सान के रूप में,
मरने से पहले कुछ इन्सानों वाले काम भी कर जाओ।।

*प्रबंधन प्रशिक्षु (लेखा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

सुनहरे पलों का यादगार सफर

*efgekuUn HkVV

कुछ मुलाकातें ऐसी होती हैं जो भुलाए नहीं भूलतीं। ऐसी ही एक मुलाकात एक बार दिल्ली से देहरादून की यात्रा के दौरान हुई जिसके बारे में मैंने उसी समय सोच लिया था कि इस मुलाकात को जरूर लिपिबद्ध करूंगा।

मैं देहरादून जनशताब्दी ट्रेन में सफर कर रहा था। उसमें मेरी बगल वाली सीट पर जो व्यक्ति यात्रा कर रहे थे, वे काफी खुश–मिजाज और धार्मिक प्रवृत्ति के थे। मैं उनसे बात करना चाह रहा था और वे मुझसे। जैसा कि स्वाभाविक है कि यात्रा के दौरान आपस में बातें भी अक्सर हो जाती हैं। हमारी बातचीत में सबसे अधिक चर्चा उत्तराखण्ड के धार्मिक स्थलों के बारे में हुई। हालांकि उत्तराखण्ड मेरी जन्म–भूमि है और मेरा पूरा बचपन भी वहीं बीता तथा वहां की यादें आज भी मन–मस्तिक पर उभरकर ताजी हो जाती हैं, पर धार्मिक स्थलों के बारे में जितनी गहरी जानकारी उन महानुभाव को थी, उसे सुनकर आनन्द की अनुभूति के साथ ही एक रोचक जानकारी भी मिली।

बातचीत के दौरान मैंने सिलसिला आगे बढ़ाया और कहा कि मैंने सुना और पढ़ा भी है कि उत्तराखण्ड की पावन भूमि सदियों से ही ऋषि–मुनियों की तपस्या–स्थल रही है और यह देखा है कि पर्यटक यहां की सुन्दर वादियों एवं ऊंचे–ऊंचे पहाड़ों को देखकर बरबस आकर्षित होते हैं तथा विशेषकर गर्मियों के मौसम में जो एक बार यहां भ्रमण कर लेता है उसका मन बार–बार यहां आने को लालायित होता है। मैंने जब उनसे पूछा कि धार्मिक स्थल तो यहां बहुत हैं, जिनमें से कुछ के दर्शन करने का मुझे भी सौभाग्य मिला, पर उनके प्रति गहरी आस्था किन मान्यताओं पर विशेष रूप से आधारित है तो उन्होंने मुझे वह सब कुछ बताया जिसके बारे में शायद कम लोग जानते होंगे। जैसा कि उन्होंने भारत भूमि को अपने स्वच्छ और पावन जल से सिंचित कर शस्य–श्यामला बनाने वाले गंगा–यमुना के उद्‌गम स्थलों को महत्वपूर्ण तीर्थ के रूप में पूजे जाने की परम्परा की बात बताई क्योंकि इन्हीं स्थलों से हमें जल का एक अनादि और अक्षय स्त्रोत मिलता है। देवभूमि में बदरी–केदार की श्रृंखला में गंगोत्री और यमुनोत्री तीर्थों के महत्व पर भी उनके विचार मन को छूने वाले थे।

धार्मिक स्थलों की यात्रा के बारे में उन्होंने बताया कि पुराणों के अनुसार तीर्थयात्रा वामावर्त अर्थात् बायीं

* वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

ओर से शुरू की जानी चाहिए अर्थात् उत्तराखण्ड के चारों तीर्थों (बदरी–केदार–यमुनोत्री और गंगोत्री) में से सर्वप्रथम यमुनोत्री से ही तीर्थ यात्रा की शुरूआत की जानी चाहिए उसके पश्चात् क्रमशः गंगोत्री, केदारनाथ और बदरीनाथ की यात्रा का सुफल प्राप्त करना चाहिए। इसमें कोई दो राय नहीं कि सुरम्य और दुर्गम बर्फीले पहाड़ों के मध्य से स्वच्छ जलाधार के रूप में अवतरित गंगा और यमुना के उद्गम स्थल तक पहुंचना यहां पर्यटकों के लिए अत्यन्त रोमांचक अनुभव तो है ही, साथ ही श्रद्धालुओं के लिए यह मोक्षधाम से कम नहीं।

यह निर्विवाद सत्य है कि देवभूमि उत्तराखण्ड स्थित पावन धाम श्री बदरीनाथ और केदारनाथ तीर्थस्थल होने के कारण पूरे विश्व में माने जाते हैं। हिन्दू संस्कृति के उपासकों के मन में जब कभी भी तीर्थाटन का भाव उमड़ता है तो वे सबसे पहले हिमालय से निकलने वाली गंगा और उसके मध्य स्थित श्री बदरीनाथ, केदारनाथ धाम के दर्शन के लिए आते हैं। निःसंदेह ये स्थल हमारी धार्मिक, ऐतिहासिक व सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक हैं।

पंचकेदारों में सर्वप्रथम पूजे जाने वाले केदारनाथ के बारे में उन्होंने बताया कि ये भगवान शिव का रूप हैं जो पूरे विश्व को मोक्ष का मार्गदर्शन कराते हैं, जबकि बदरीनाथ धाम में भगवान विष्णु मूर्त रूप में विद्यमान हैं। जहां से भक्तगण सुख, समृद्धि एंव वैभव का आशीर्वाद लेकर लौटते हैं। पौराणिक धार्मिक मान्यता के अनुसार सफल यात्रा के लिए उन्होंने केदारनाथ धाम के दर्शनों के बाद ही बदरीनाथ धाम की यात्रा करने की बात कही और कहा कि ऐसा करने से सुफल प्राप्त होता है। यह भी कम लोग जानते होंगे कि भगवान शिव के ग्यारहवें ज्योतिर्लिंग के रूप में प्रसिद्ध केदारनाथ जी को स्कन्दपुराण एवं शिवपुराण में केदारेश्वर भी लिखा गया है।

एक धार्मिक मान्यता का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि महाभारत युद्ध के पश्चात् पाण्डव भगवान शिव के दर्शन के लिए इस क्षेत्र में आए और अराधना की। बदरीनाथ धाम में जहां आज भगवान विष्णु की मूर्ति विराजमान है, शास्त्रों में मिलता है कि इसी स्थान पर भगवान विष्णु ने तप किया था और माता लक्ष्मी ने बदरी का वृक्ष बनकर तपती धूप, बर्फीले तूफान और वर्षा से उनकी रक्षा की थी। उसके बाद लक्ष्मी के त्याग से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने उन्हें वरदान मांगने को कहा, माता लक्ष्मी ने भगवान से हर युग में अपने नाम के आगे उनके नाम का वर मांगा। तभी से भगवान विष्णु और लक्ष्मी को बदरीनाथ धाम के नाम से पुकारा गया। एक गांव जो भारत का आखिरी गांव है– ''माणा'' वह भी बदरीनाथ धाम के साथ लगा है। इस गांव के सामने देवताओं का स्वर्ग यानी अलकापुरी है। कहा जाता है कि पांडव इसी मार्ग से होते हुए अलकापुरी गए थे। जिस मार्ग से वे गए थे वहां दो पहाड़ियों के बीच गहरी खाई थी जिसे पार करना आसान नहीं था तब भीम ने एक भारी–भरकम चट्टान उठाकर फैंकी और खाई को पाटकर पुल के रूप में परिवर्तित कर दिया। इसलिए आज भी उसे भीम पुल के नाम से जाना जाता है।

धार्मिक मान्यता यह भी है कि कलयुग के अंतिम चरण में जब पृथ्वी पर पापों की अधिकता होगी उस समय भगवान बदरी, भविष्य बदरी स्थान को प्रस्थान कर जाएंगे और नरनारायण पर्वत एक–दूसरे से मिलकर बदरीनाथपुरी का मार्ग सदैव के लिए बंद कर देंगे। यह नरनारायण पर्वत बदरीनाथ के ठीक ऊपर पर्वत श्रृखंला पर बताया गया है।

ये तो थी बदरीनाथ–केदारनाथ धाम की कुछ रोचक जानकारी, अब उन्होंने यमुनोत्री–गंगोत्री के प्रसिद्ध स्थलों के बारे में भी बताया। सूर्यपुत्री यमुना का उद्‌गम स्थल यमुनोत्री स्वच्छ जलधार के रूप में प्रवाहित होती हुई आगे बढ़कर गहरी और बड़ी नदी के रूप में परिवर्तित होती है। श्रद्धालु मंदिर में पूजा–अर्चना करते हैं लेकिन ऐसा माना जाता है कि आरंभिक काल में यहां पर कोई मंदिर नहीं था जो जलकुंड यहां पर है उसके बारे में प्रत्यक्षदर्शियों का कहना कि इस कुंड का जल इतना गर्म है कि पोटली में बांधकर डाला गया चावल पक जाता है।

जहां से गंगाजी अवतरित होती हैं, वह है गंगोत्री। यहां तर्पण व उपवास करने से यज्ञ का पुण्य प्राप्त होता है। शास्त्र व पुराणों में भले ही यात्रा का विधान यमुनोत्री से प्रारंभ माना गया है परन्तु आज श्रद्धाओं और पर्यटकों के मध्य गंगोत्री अधिक लोकप्रिय है, वैसे ही जैसे केदारनाथ की तुलना में बदरीनाथ धाम अधिक लोकप्रिय है। एक ऐतिहासिक मत का हवाला देते हुए उन्होंने बताया कि मंदिर की स्थापना का श्रेय जगद्‌गुरू शंकराचार्य को जाता है जिसे कालान्तर में गोरखा सरदार ने नये रूप में बनवाया और आज जो मंदिर है उसका जीर्णोद्धार जयपुर नरेश ने करवाया। गंगोत्री में श्रद्धालु नदी के तट पर स्थित भगीरथ शिला पर पितरों की मुक्ति के लिए पिंडदान करते हैं। मान्यता है कि यह वह शिला है जिस पर बैठकर राजा भागीरथ ने गंगा को पृथ्वी पर लाने के लिए कठोर तप किया था।

गंगा सदा भारतीय संस्कृति, सभ्यता और इतिहास की प्रमुख नदी रही है। पवित्र नदी के रूप में सदैव ही इसका आदर किया गया है। अनेक धार्मिक मान्यताएं, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मूल्य युगों–युगों से इस नदी से जुड़े हैं। नदी को जीवनदायिनी ही नहीं मोक्षदायिनी गरिमाबोधक शब्दों से नवाजा गया है। हर भारतीय से गंगा का अटूट रिश्ता है क्योंकि गंगा सिर्फ एक नदी नहीं है– गंगा एक प्रतीक भी है, पवित्रता और निर्मलता की, धार्मिक और आध्यात्मिक मूल्यों की एवं भारतीय संस्कृति की। प्राचीन काल से ही गंगा का महत्व है और उसे माँ कहकर भी पुकारा जाता है।

हमने बीच–बीच में चाय–नाश्ते के साथ अन्य विषयों के पर भी चर्चा की। हमारा सफर भी पूरा होने वाला था इसलिए बातों का सिलसिला समाप्त करना हमारी मजबूरी थी। वे एक सेवानिवृत्त प्रोफेसर थे और पत्रकारिता से उनका गहरा लगाव होने के कारण उनकी लेखन में गहरी रुचि थी। उन्होंने उत्तराखण्ड के बारे में काफी कुछ लिखा भी और कहा कि पानी हो, झरना हो, पहाड़ हो, देवी–देवताओं के मंदिर हो, फुलवारी हो, कंद–मूल और फल हो या अन्य कोई मनोहरकारी दृश्य, इन सब के साथ यह सच है कि विपुल प्राकृतिक सौन्दर्य और सम्पदा से भरपूर उत्तराखण्ड की अपनी एक विशिष्ट पहचान है और रहेगी। वास्तव में उनके साथ बिताए सुनहरे पलों को भूल पाना शायद मुश्किल है।

हिन्दी : हर भारतीय की पहचान

*jkd'k flg ijLr

अनगिनत लेख एवं विचार लिखे जा चुके हैं 'राजभाषा हिन्दी' पर। मैंने भी सोचा कि कुछ मैं भी लिखूं और अपने विचार से प्रोत्साहनस्वरुप राजभाषा हिन्दी में कार्य करने हेतु प्रेरित करने वाले कुछ शब्द.......तभी लिखते–लिखते ही मन में विचार आया, आखिर हिन्दी क्या प्रोत्साहित करने वाले लेख, विचार, कविता या कहानी तक ही सीमित है? हिन्दी जिस दिन हमारे देश की संविधान सभा द्वारा संघ की राजभाषा घोषित की गई, वह दिन (14 सितम्बर, 1949) निश्चित ही स्वतंत्र भारत के लिए गौरवपूर्ण दिन था। हिन्दी भाषा अपने आप में समर्थ है जिसमें अपने देश की संस्कृति, सभ्यता, अस्मिता एवं एकता की भावना जागृत होती है, जिसके द्वारा हम सभी एक–दूसरे की भावनाओं को आसानी से समझ लेते हैं और जिससे हमारी भारतीयता की पहचान होती है। हिन्दी हमारे देश की सम्पर्क भाषा है और भारतीय संस्कृति के मूलमंत्र 'वसुधैव कुटुम्बकम' को साकार करती है।

आज विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में द्वितीय सबसे बड़ी भाषा है 'हिन्दी', जिस पर हमें गर्व होना चाहिए और वह दिन दूर नहीं जब हिन्दी, सयुंक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनेगी इसके लिए सिर्फ 129 देशों के समर्थन की आवश्यकता है, और यह कोई मुश्किल काम नहीं है क्योंकि अभी हाल ही में विश्व योग दिवस को 177 देशों का भरपूर समर्थन मिला। फिर भी आज अपने ही देश में हिन्दी की स्थिति बहुत कमजोर है, सच कहें तो इसके जिम्मेदार भी हम ही हैं। हिन्दी के प्रति रुचि जागृत करने के लिए विभिन्न प्रकार की कार्यशालाओं, संगोष्ठियों एवं पखवाड़ा आदि का आयोजन किया जाता है। ये सब करने की आवश्यकता हमें क्यों पड़ती है, संविधान सभा द्वारा पहले ही घोषित किया जा चुका है कि संघ की राजभाषा हिन्दी है, अतः हमारा ये संवैधानिक दायित्व एवं कर्तव्य है कि हम इसका सख्ती से पालन करें।

यहाँ मैथिली शरण गुप्त द्वारा लिखित प्रसिद्ध पंक्तियां हमें सीख देती हैं –

हाँ, वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है,
ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है?

हम कौन थे, क्या हो गये हैं और क्या होंगे अभी,
आओ, विचारें आज मिलकर ये समस्याएं सभी।

जिसको नहीं गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं नरपशु निरा है, और मृतक समान है।।

उपरोक्त पंक्तियों में कितनी सच्चाई है कि अगर हमारे दिल में, हमारे देश के लिए, हमारी राष्ट्रभाषा के लिए, गौरव नहीं है, तो हमारा जीवन गौरवहीन है– और हम मृत समान हैं।

हिन्दी हमें भावनात्मक एकता से जोड़ती है। राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी हमारे देश की एकता में सबसे अधिक सहायक है। फिर भी हम अंग्रेजी के पीछे भागते हैं। यह हमारी कैसी नादानी है? जबकि हिन्दी विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। प्रकृति से यह उदार, ग्रहणशील, सहिष्णु और भारत की राष्ट्रीय चेतना की संवाहिका है। फिर भी हिन्दी का हर दृष्टि से इतना महत्त्व होते हुए भी प्रत्येक स्तर पर इसकी इतनी उपेक्षा क्यों? यह एक बहुत बड़ी विडम्बना है कि जिस भाषा को कश्मीर से कन्याकुमारी तक सारे भारत में समझा जाता हो,

*हिन्दी अनुवादक, क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद

उस भाषा के प्रति घोर उपेक्षा व अवज्ञा का भाव, कितनी दुःख की बात है।

आज यदि कोई हिन्दी भाषा में बात करे तो उसे कमजोर आँका जाता है, लोग समझते हैं कि उसे कुछ नहीं आता है और यदि कोई अंग्रेजी की दो–चार लाइन बोल दे तो लोग बड़े सम्मान के साथ उनकी प्रशंसा करने में थकते नहीं हैं। आज की नई पीढ़ी हिन्दी के प्रति रुझान दिखाने के बजाय उसकी उपेक्षा में आधुनिकता का बोध इस तरह कराती है जैसे कि अंग्रेजी 'नई भारतीय सभ्यता' का प्रतीक हो।

सरकारी कार्यालयों में भी अक्सर यह सुनने को मिलता है कि हमें हिन्दी में कामकाज करने में दिक्कत आती है। इसमें शब्द नहीं मिलते या इसमें प्रशासनिक/तकनीकी शब्दावली का अभाव है, जबकि ऐसा कुछ भी नहीं है आज राजभाषा हिन्दी अपने आप में समर्थ है, बस हमें दिल से अपनाने की जरूरत है। यदि किसी शब्द का हिन्दी पर्याय कठिन प्रतीत होता है तो हमें उसे प्रचलित भाषा में लिख देना चाहिए। यहाँ यह कहना उचित होगा कि 'नहीं करने के हजार बहाने होते हैं और करने के कोई बहाने नहीं होते'।

अंग्रेजी को बुरा नहीं मानना चाहिए। इतिहास गवाह है कि जिस चीज का हिंदुस्तान में विरोध हुआ है, वह और अधिक लोकप्रिय हुआ है। या कहें कि उसका प्रसार और बढ़ा ही है।

यहाँ ये मतलब नहीं कि सभी भाषाओं को त्यागकर हिन्दी को ही सम्मान दिया जाए, ऐसा नहीं है क्योंकि हर भाषा का अपना एक महत्व होता है ये हमारे विचारों, भावनाओं का माध्यम होती हैं इसलिए सभी भाषाओं का सम्मान करना चाहिए। लेकिन जब राष्ट्रहित, राष्ट्रभाषा, राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्रीय अस्मिता की बात आये तो हमें स्थानीय एवं तात्कालिक हितों व पूर्वाग्रहों से ऊपर उठकर अपने देश की संविधान सभा द्वारा घोषित राजभाषा हिन्दी का सम्मान करना चाहिए, यह हम सभी का संवैधानिक नैतिक कर्तव्य है।

हम चाहे अपनी शिक्षा–दीक्षा किसी भी भाषा में प्राप्त करें लेकिन जब राष्ट्रहित की बात आए तो हमें अपने देश की राष्ट्रभाषा व राजभाषा को नहीं भूलना चाहिए। राष्ट्रभाषा व राजभाषा के सन्दर्भ में महात्मा गाँधी ने भी कहा था कि – 'दुनिया वालों से कह दो कि, गाँधी अंग्रेजी भूल गया है' और भाषा संबंधी अपने विचार में कहा, "मेरी मातृभाषा में कितनी ही खामियां क्यों न हों, मैं इससे इसी तरह चिपटा रहूँगा जिस तरह बच्चा अपनी माँ की छाती से, जो मुझे जीवनदायनी दूध दे सकती है। अगर अंग्रेजी उस जगह को हड़पना चाहती है, जिसकी वह हकदार नहीं है, तो मैं उससे सख्त नफरत करूँगा – वह कुछ लोगों के सीखने की भाषा हो सकती है, लाखो–करोड़ों की नहीं"।

अंत में हिन्दी की तरफ से एक छोटी सी अपील

'हम सारी भाषाएँ संस्कृत की बेटियां हैं। बड़ी बेटी होने का सौभाग्य मुझे मिला, लेकिन इससे अन्य भाषाओं का महत्त्व कम तो नहीं हो जाता और यह भी तो सच है ना कि मुझे अपमानित करने से मराठी, तमिल या अन्य भाषाओं का महत्त्व बढ़ तो नहीं जाएगा ?

यह कैसा भाषा गौरव है जो अपने अस्तित्व को स्थापित करने के लिए स्थापित भाषा को उखाड़ देने की धृष्टता करे। मैं चारों तरफ अपना स्थान बना चुकी हूँ समर्थ भाषाओं में मेरा नाम है और रोज़ पल्लवित और पुष्पित हो रही हूं। मेरा आधार मजबूत है इसलिए बरसों से भारतीय दर्शकों का मनोरंजन कर रही फिल्म इन्डस्ट्री से पूछ कर देख लो कि क्या मेरे बिना उसका अस्तित्व रह सकेगा ? कैसे निकालोगे लता के सुरीले कंठ से, गुलजार के चमत्कारिक लेखनी से मुझे ?

cl bruk gh]
vki lcdh
ge'kk&lh]
fgUnh

उसने कहा था

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का जन्म 7 जुलाई 1883 को जयपुर, राजस्थान में हुआ था। मात्र 10 वर्ष की आयु मे ही गुलेरी जी संस्कृत भाषा के ज्ञान एवं भाषण में अभ्यस्त हो गए थे। उन्होंने अध्ययन और स्वाध्याय द्वारा हिंदी और अंग्रेजी के अतिरिक्त संस्कृत, बंग्ला, मराठी आदि के साथ ही जर्मन तथा फ्रेंच भाषाओं का ज्ञान भी प्राप्त कर लिया था, उनकी प्रसिद्ध कहानियों में से एक कहानी प्रस्तुत की जा रही है।

बड़े–बड़े शहरों के इक्के–गाड़ीवालों की जबान के कोड़ों से जिनकी पीठ छिल गई है, और कान पक गए हैं, उनसे हमारी प्रार्थना है कि अमृतसर के बंबूकार्टवालों की बोली का मरहम लगावें। जब बड़े–बड़े शहरों की चौड़ी सड़कों पर घोड़े की पीठ चाबुक से धुनते हुए, इक्केवाले कभी घोड़े की नानी से अपना निकट–संबंध स्थिर करते हैं, कभी राह चलते पैदलों की आँखों के न होने पर तरस खाते हैं, कभी उनके पैरों की अँगुलियों के पोरों को चींथ कर अपने–ही को सताया हुआ बताते हैं, और संसार–भर की ग्लानि, निराशा और क्षोभ के अवतार बने, नाक की सीध चले जाते हैं, तब अमृतसर में उनकी बिरादरीवाले तंग चक्करदार गलियों में, हर–एक लड्डीवाले के लिए ठहर कर सब्र का समुद्र उमड़ा कर बचो खालसा जी। हटो भाई जी। ठहरना भाई। आने दो लाला जी। हटो बाछा, कहते हुए सफेद फेंटों, खच्चरों और बत्तकों, गन्ने और खोमचे और भारेवालों के जंगल में से राह खेते हैं। क्या मजाल है कि जी और साहब बिना सुने किसी को हटना पड़े। यह बात नहीं कि उनकी जीभ चलती नहीं; पर मीठी छुरी की तरह महीन मार करती हुई। यदि कोई बुढ़िया बार–बार चितौनी देने पर भी लीक से नहीं हटती, तो उनकी बचनावली के ये नमूने हैं – हट जा जीणे जोगिए; हट जा करमाँवालिए; हट जा पुत्तां प्यारिए; बच जा लंबी वालिए। समष्टि में इनके अर्थ हैं, कि तू जीने योग्य है, तू भाग्योंवाली है, पुत्रों को प्यारी है, लंबी उमर तेरे सामने है, तू क्यों मेरे पहिए के नीचे आना चाहती है? बच जा।

ऐसे बंबूकार्टवालों के बीच में हो कर एक लड़का और एक लड़की चौक की एक दुकान पर आ मिले। उसके बालों और इसके ढीले सुथने से जान पड़ता था कि दोनों सिख हैं। वह अपने मामा के केश धोने के लिए दही लेने आया था, और यह रसोई के लिए बड़ियाँ। दुकानदार एक परदेसी से गुथ रहा था, जो सेर–भर गीले पापड़ों की गड्डी को गिने बिना हटता न था।

'तेरे घर कहाँ है?'

'मगरे में; और तेरे?'

'माँझे में; यहाँ कहाँ रहती है?'

'अतरसिंह की बैठक में वे मेरे मामा होते हैं।'

'मैं भी मामा के यहाँ आया हूँ, उनका घर गुरु बजार में हैं।'

इतने में दुकानदार निबटा, और इनका सौदा देने लगा। सौदा ले कर दोनों साथ–साथ चले। कुछ दूर जा कर लड़के ने मुसकरा कर पूछा, – 'तेरी कुड़माई हो गई?' इस पर लड़की कुछ आँखें चढ़ा कर धत् कह कर दौड़ गई, और लड़का मुँह देखता रह गया।

दूसरे–तीसरे दिन सब्जीवाले के यहाँ, दूधवाले के यहाँ अकस्मात दोनों मिल जाते। महीना–भर यही हाल रहा। दो–तीन बार लड़के ने फिर पूछा, तेरी कुड़माई हो गई? और उत्तर में वही 'धत्' मिला। एक दिन जब फिर लड़के ने वैसे ही हँसी में चिढ़ाने के लिए पूछा तो लड़की, लड़के की संभावना के विरुद्ध बोली – 'हाँ हो गई।'

'कब?'

'कल, देखते नहीं, यह रेशम से कढ़ा हुआ सालू।' लड़की भाग गई। लड़के ने घर की राह ली। रास्ते में एक लड़के को मोरी में ढकेल दिया, एक छावड़ीवाले की दिन–भर की कमाई खोई, एक कुत्ते पर पत्थर मारा और एक गोभीवाले के ठेले में दूध उँड़ेल दिया। सामने नहा कर आती हुई किसी वैष्णवी से टकरा कर अंधे की उपाधि पाई। तब कहीं घर पहुँचा।

'राम–राम, यह भी कोई लड़ाई है। दिन–रात खंदकों में बैठे हड्डियाँ अकड़ गईं। लुधियाना से दस गुना जाड़ा और मेंह और बरफ ऊपर से। पिंडलियों तक कीचड़ में धँसे हुए हैं। जमीन कहीं दिखती नहीं; – घंटे–दो–घंटे में कान के परदे फाड़नेवाले धमाके के साथ सारी खंदक हिल जाती

है और सौ–सौ गज धरती उछल पड़ती है। इस गैबी गोले से बचे तो कोई लड़े। नगरकोट का जलजला सुना था, यहाँ दिन में पचीस जलजले होते हैं। जो कहीं खंदक से बाहर साफा या कुहनी निकल गई, तो चटाक से गोली लगती है। न मालूम बेईमान मिट्टी में लेटे हुए हैं या घास की पत्तियों में छिपे रहते हैं।'

'लहनासिंह, और तीन दिन हैं। चार तो खंदक में बिता ही दिए। परसों रिलीफ आ जाएगी और फिर सात दिन की छुट्टी। अपने हाथों झटका करेंगे और पेट–भर खा कर सो रहेंगे। उसी फिरंगी मेम के बाग में – मखमल का–सा हरा घास है। फल और दूध की वर्षा कर देती है। लाख कहते हैं, दाम नहीं लेती। कहती है, तुम राजा हो, मेरे मुल्क को बचाने आए हो।'

'चार दिन तक एक पलक नींद नहीं मिली। बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही। मुझे तो संगीन चढ़ा कर मार्च का हुक्म मिल जाय। फिर सात जरमनों को अकेला मार कर न लौटूँ, तो मुझे दरबार साहब की देहली पर मत्था टेकना नसीब न हो। पाजी कहीं के, कलों के घोड़े – संगीन देखते ही मुँह फाड़ देते हैं, और पैर पकड़ने लगते हैं। यों अँधेरे में तीस–तीस मन का गोला फेंकते हैं। उस दिन धावा किया था – चार मील तक एक जर्मन नहीं छोड़ा था। पीछे जनरल ने हट जाने का कमान दिया, नहीं तो – '

'नहीं तो सीधे बर्लिन पहुँच जाते! क्यों?' सूबेदार हजारासिंह ने मुसकरा कर कहा –'लड़ाई के मामले जमादार या नायक के चलाए नहीं चलते। बड़े अफसर दूर की सोचते हैं। तीन सौ मील का सामना है। एक तरफ बढ़ गए तो क्या होगा?'

'सूबेदार जी, सच है,' लहनसिंह बोला – 'पर करें क्या? हड्डियों–हड्डियों में तो जाड़ा धँस गया है। सूर्य निकलता नहीं, और खाईं में दोनों तरफ से चंबे की बावलियों के से सोते झर रहे हैं। एक धावा हो जाय, तो गरमी आ जाय।'

'उदमी, उठ, सिगड़ी में कोले डाल। वजीरा, तुम चार जने बालटियाँ ले कर खाईं का पानी बाहर फेंको। महासिंह, शाम हो गई है, खाईं के दरवाजे का पहरा बदल ले।' – यह कहते हुए सूबेदार सारी खंदक में चक्कर लगाने लगे। वजीरासिंह पलटन का विदूषक था। बाल्टी में गँदला पानी भर कर खाईं के बाहर फेंकता हुआ बोला – 'मैं पाधा बन गया हूँ। करो जर्मनी के बादशाह का तर्पण!' इस पर सब खिलखिला पड़े और उदासी के बादल फट गए।

लहनासिंह ने दूसरी बाल्टी भर कर उसके हाथ में दे कर कहा – 'अपनी बाड़ी के खरबूजों में पानी दो। ऐसा खाद का पानी पंजाब–भर में नहीं मिलेगा।'

'हाँ, देश क्या है, स्वर्ग है। मैं तो लड़ाई के बाद सरकार से दस घुमा जमीन यहाँ माँग लूँगा और फलों के बूटे लगाऊँगा।'

'लाड़ी होराँ को भी यहाँ बुला लोगे? या वही दूध पिलानेवाली फरंगी मेम – '

'चुप कर। यहाँ वालों को शरम नहीं।'

'देश–देश की चाल है। आज तक मैं उसे समझा न सका कि सिख तंबाखू नहीं पीते। वह सिगरेट देने में हठ करती है, ओठों में लगाना चाहती है,और मैं पीछे हटता हूँ तो समझती है कि राजा बुरा मान गया, अब मेरे मुल्क के लिए लड़ेगा, नहीं।'

'अच्छा, अब बोधसिंह कैसा है?'

'अच्छा है।'

'जैसे मैं जानता ही न होऊँ ! रात–भर तुम अपने कंबल उसे उढ़ाते हो और आप सिगड़ी के सहारे गुजर करते हो। उसके पहरे पर आप पहरा दे आते हो। अपने सूखे लकड़ी के तख्तों पर उसे सुलाते हो, आप कीचड़ में पड़े रहते हो। कहीं तुम न माँदे पड़ जाना। जाड़ा क्या है, मौत है, और निमोनिया से मरनेवालों को मुरब्बे नहीं मिला करते।'

'मेरा डर मत करो। मैं तो बुलेल की खड्ड के किनारे मरूँगा। भाई कीरतसिंह की गोदी पर मेरा सिर होगा और मेरे हाथ के लगाए हुए आँगन के आम के पेड़ की छाया होगी।'

वजीरासिंह ने त्योरी चढ़ा कर कहा – 'क्या मरने–मारने की बात लगाई है? मरें जर्मनी और तुरक! हाँ भाइयों, कैसे –

दिल्ली शहर तें पिशोर नुं जांदिए,
कर लेणा लौंगां दा बपार मड़िए;
कर लेणा नाड़ेदा सौदा अड़िए –
(ओय) लाणा चटाका कदुए नुँ।
कद्दू बणाया वे मजेदार गोरिए,
हुण लाणा चटाका कदुए नुँ।।

कौन जानता था कि दाढ़ियोंवाले, घरबारी सिख ऐसा लुच्चों का गीत गाएँगे, पर सारी खंदक इस गीत से गूँज उठी और सिपाही फिर ताजे हो गए, मानों चार दिन से सोते और मौज ही करते रहे हों।

दोपहर रात गई है। अँधेरा है। सन्नाटा छाया हुआ है। बोधासिंह खाली बिसकुटों के तीन टिनों पर अपने दोनों कंबल बिछा कर और लहनासिंह के दो कंबल और एक बरानकोट ओढ़ कर सो रहा है। लहनासिंह पहरे पर खड़ा हुआ है। एक आँख खाईं के मुँह पर है और एक बोधासिंह के दुबले शरीर पर। बोधासिंह कराहा।

'क्यों बोधा भाई, क्या है?'

'पानी पिला दो।'

लहनासिंह ने कटोरा उसके मुँह से लगा कर पूछा – 'कहो कैसे हो?' पानी पी कर बोधा बोला – 'कँपनी छुट रही है। रोम–रोम में तार दौड़ रहे हैं। दाँत बज रहे हैं।'

'अच्छा, मेरी जरसी पहन लो !'

'और तुम?'

'मेरे पास सिगड़ी है और मुझे गर्मी लगती है। पसीना आ रहा है।'

'ना, मैं नहीं पहनता। चार दिन से तुम मेरे लिए – '

'हाँ, याद आई। मेरे पास दूसरी गरम जरसी है। आज सबेरे ही आई है। विलायत से बुन–बुन कर भेज रही हैं मेमें, गुरु उनका भला करें।' यों कह कर लहना अपना कोट उतार कर जरसी उतारने लगा।

'सच कहते हो?'

'और नहीं झूठ?' यों कह कर नाँहीं करते बोधा को उसने जबरदस्ती जरसी पहना दी और आप खाकी कोट और जीन का कुरता भर पहन–कर पहरे पर आ खड़ा हुआ। मेम की जरसी की कथा केवल कथा थी।

आधा घंटा बीता। इतने में खाईं के मुँह से आवाज आई – 'सूबेदार हजारासिंह।'

'कौन लपटन साहब? हुक्म हुजूर!' – कह कर सूबेदार तन कर फौजी सलाम करके सामने हुआ।

'देखो, इसी दम धावा करना होगा। मील भर की दूरी पर पूरब के कोने में एक जर्मन खाईं है। उसमें पचास से ज्यादा जर्मन नहीं हैं। इन पेड़ों के नीचे–नीचे दो खेत काट कर रास्ता है। तीन–चार घुमाव हैं। जहाँ मोड़ है वहाँ पंद्रह जवान खड़े कर आया हूँ। तुम यहाँ दस आदमी छोड़ कर सब को साथ ले उनसे जा मिलो। खंदक छीन कर वहीं, जब तक दूसरा हुक्म न मिले, डटे रहो। हम यहाँ रहेगा।'

'जो हुक्म।'

चुपचाप सब तैयार हो गए। बोधा भी कंबल उतार कर चलने लगा। तब लहनासिंह ने उसे रोका। लहनासिंह आगे हुआ तो बोधा के बाप सूबेदार ने उँगली से बोधा की ओर इशारा किया। लहनासिंह समझ कर चुप हो गया। पीछे दस आदमी कौन रहें, इस पर बड़ी हुज्जत हुई। कोई रहना न चाहता था। समझा–बुझा कर सूबेदार ने मार्च किया। लपटन साहब लहना की सिगड़ी के पास मुँह फेर

कर खड़े हो गए और जेब से सिगरेट निकाल कर सुलगाने लगे। दस मिनट बाद उन्होंने लहना की ओर हाथ बढ़ा कर कहा – 'लो तुम भी पियो।'

आँख मारते–मारते लहनासिंह सब समझ गया। मुँह का भाव छिपा कर बोला – 'लाओ साहब।' हाथ आगे करते ही उसने सिगड़ी के उजाले में साहब का मुँह देखा। बाल देखे। तब उसका माथा ठनका। लपटन साहब के पट्टियों वाले बाल एक दिन में ही कहाँ उड़ गए और उनकी जगह कैदियों से कटे बाल कहाँ से आ गए?' शायद साहब शराब पिए हुए हैं और उन्हें बाल कटवाने का मौका मिल गया है? लहनासिंह ने जाँचना चाहा। लपटन साहब पाँच वर्ष से उसकी रेजिमेंट में थे।

'क्यों साहब, हम लोग हिंदुस्तान कब जाएँगे?'

'लड़ाई खत्म होने पर। क्यों, क्या यह देश पसंद नहीं ?'

'नहीं साहब, शिकार के वे मजे यहाँ कहाँ? याद है, पारसाल नकली लड़ाई के पीछे हम आप जगाधरी जिले में शिकार करने गए थे –

'हाँ, हाँ – '

'वहीं जब आप खोते पर सवार थे और और आपका खानसामा अब्दुल्ला रास्ते के एक मंदिर में जल चढ़ाने को रह गया था? बेशक पाजी कहीं का – सामने से वह नील गाय निकली कि ऐसी बड़ी मैंने कभी न देखी थीं। और आपकी एक गोली कंधे में लगी और पुट्ठे में निकली। ऐसे अफसर के साथ शिकार खेलने में मजा है। क्यों साहब, शिमले से तैयार होकर उस नील गाय का सिर आ गया था न? आपने कहा था कि रेजमेंट की मैस में लगाएँगे।'

'हाँ पर मैंने वह विलायत भेज दिया – '

'ऐसे बड़े–बड़े सींग! दो–दो फुट के तो होंगे?'

'हाँ, लहनासिंह, दो फुट चार इंच के थे। तुमने सिगरेट नहीं पिया?'

'पीता हूँ साहब, दियासलाई ले आता हूँ' – कह कर लहनासिंह खंदक में घुसा। अब उसे संदेह नहीं रहा था। उसने झटपट निश्चय कर लिया कि क्या करना चाहिए। अँधेरे में किसी सोनेवाले से वह टकराया।

'कौन? वजीरासिंह?'

'हाँ, क्यों लहना? क्या कयामत आ गई? जरा तो आँख लगने दी होती?'

'होश में आओ। कयामत आई है और लपटन साहब की वर्दी पहन कर आई है।'

'क्या?'

'लपटन साहब या तो मारे गए है या कैद हो गए हैं। उनकी वर्दी पहन कर यह कोई जर्मन आया है। सूबेदार ने इसका मुँह नहीं देखा। मैंने देखा और बातें की है। सौहरा साफ उर्दू बोलता है, पर किताबी उर्दू। और मुझे पीने को सिगरेट दिया है?'

'तो अब!'

'अब मारे गए। धोखा है। सूबेदार होराँ, कीचड़ में चक्कर काटते फिरेंगे और यहाँ खाईं पर धावा होगा। उठो, एक काम करो। पल्टन के पैरों के निशान देखते–देखते दौड़ जाओ। अभी बहुत दूर न गए होंगे।

सूबेदार से कहो एकदम लौट आएँ। खंदक की बात झूठ है। चले जाओ, खंदक के पीछे से निकल जाओ। पत्ता तक न खड़के। देर मत करो।'

'हुकुम तो यह है कि यहीं – '

'ऐसी–तैसी हुकुम की! मेरा हुकुम – जमादार लहनासिंह जो इस वक्त यहाँ सब से बड़ा अफसर है, उसका हुकुम है। मैं लपटन साहब की खबर लेता हूँ।'

'पर यहाँ तो तुम आठ हो।'

'आठ नहीं, दस लाख। एक–एक अकालिया सिख सवा लाख के बराबर होता है। चले जाओ।'

लौट कर खाईं के मुहाने पर लहनासिंह दीवार से चिपक गया। उसने देखा कि लपटन साहब ने जेब से बेल के बराबर तीन गोले निकाले। तीनों को जगह–जगह खंदक की दीवारों में घुसेड़ दिया और तीनों में एक तार सा बाँध दिया। तार के आगे सूत की एक गुत्थी थी, जिसे सिगड़ी

के पास रखा। बाहर की तरफ जा कर एक दियासलाई जला कर गुत्थी पर रखने –

इतने में बिजली की तरह दोनों हाथों से उल्टी बंदूक को उठा कर लहनासिंह ने साहब की कुहनी पर तान कर दे मारा। धमाके के साथ साहब के हाथ से दियासलाई गिर पड़ी। लहनासिंह ने एक कुंदा साहब की गर्दन पर मारा और साहब 'ऑख! मीन गौट्ट' कहते हुए चित्त हो गए। लहनासिंह ने तीनों गोले बीन कर खंदक के बाहर फेंके और साहब को घसीट कर सिगड़ी के पास लिटाया। जेबों की तलाशी ली। तीन–चार लिफाफे और एक डायरी निकाल कर उन्हें अपनी जेब के हवाले किया।

साहब की मूर्छा हटी। लहनासिंह हँस कर बोला – 'क्यों लपटन साहब? मिजाज कैसा है? आज मैंने बहुत बातें सीखीं। यह सीखा कि सिख सिगरेट पीते हैं। यह सीखा कि जगाधरी के जिले में नीलगाएँ होती हैं और उनके दो फुट चार इंच के सींग होते हैं। यह सीखा कि मुसलमान खानसामा मूर्तियों पर जल चढ़ाते हैं और लपटन साहब खोते पर चढ़ते हैं। पर यह तो कहो, ऐसी साफ उर्दू कहाँ से सीख आए? हमारे लपटन साहब तो बिन डेम के पाँच लफ्ज भी नहीं बोला करते थे।'

लहना ने पतलून के जेबों की तलाशी नहीं ली थी। साहब ने मानो जाड़े से बचने के लिए, दोनों हाथ जेबों में डाले।

लहनासिंह कहता गया – 'चालाक तो बड़े हो पर माँझे का लहना इतने बरस लपटन साहब के साथ रहा है। उसे चकमा देने के लिए चार ऑखें चाहिए। तीन महीने हुए एक तुरकी मौलवी मेरे गाँव आया था। औरतों को बच्चे होने के ताबीज बाँटता था और बच्चों को दवाई देता था। चौधरी के बड़ के नीचे मंजा बिछा कर हुक्का पीता रहता था और कहता था कि जर्मनीवाले बड़े पंडित हैं। वेद पढ़–पढ़ कर उसमें से विमान चलाने की विद्या जान गए हैं। गौ को नहीं मारते। हिंदुस्तान में आ जाएँगे तो गोहत्या बंद कर देंगे। मंडी के बनियों को बहकाता कि डाकखाने से रूपया निकाल लो। सरकार का राज्य जानेवाला है। डाक–बाबू पोल्हूराम भी डर गया था। मैंने मुल्लाजी की दाढ़ी मूड़ दी थी। और गाँव से बाहर निकाल कर कहा था कि जो मेरे गाँव में अब पैर रक्खा तो – '

साहब की जेब में से पिस्तौल चला और लहना की जाँघ में गोली लगी। इधर लहना की हैनरी मार्टिन के दो फायरों ने साहब की कपाल–क्रिया कर दी। धड़ाका सुन कर सब दौड़ आए।

बोधा चिल्लाया – 'क्या है?'

लहनासिंह ने उसे यह कह कर सुला दिया कि एक हड़का हुआ कुत्ता आया था, मार दिया और, औरों से सब हाल कह दिया। सब बंदूकें ले कर तैयार हो गए। लहना ने साफा फाड़ कर घाव के दोनों तरफ पट्टियाँ कस कर बाँधी। घाव मांस में ही था। पट्टियों के कसने से लहू निकलना बंद हो गया।

इतने में सत्तर जर्मन चिल्ला कर खाईं में घुस पड़े। सिक्खों की बंदूकों की बाढ़ ने पहले धावे को रोका। दूसरे को रोका। पर यहाँ थे आठ (लहनासिंह तक–तक कर मार रहा था – वह खड़ा था, और, और लेटे हुए थे) और वे सत्तर। अपने मुर्दा भाइयों के शरीर पर चढ़ कर जर्मन आगे घुसे आते थे। थोड़े से मिनिटों में वे – अचानक आवाज आई, 'वाह गुरुजी की फतह? वाह गुरुजी का खालसा!!' और धड़ाधड़ बंदूकों के फायर जर्मनों की पीठ पर पड़ने लगे। ऐन मौके पर जर्मन दो चक्की के पाटों के बीच में आ गए। पीछे से सूबेदार हजारासिंह के जवान आग बरसाते थे और सामने लहनासिंह के साथियों के संगीन चल रहे थे। पास आने पर पीछेवालों ने भी संगीन पिरोना शुरू कर दिया।

एक किलकारी और – अकाल सिक्खाँ दी फौज आई! वाह गुरुजी दी फतह! वाह गुरुजी दा खालसा! सत श्री अकालपुरुख!!! और लड़ाई खतम हो गई। तिरेसठ जर्मन या तो खेत रहे थे या कराह रहे थे। सिक्खों में पंद्रह के प्राण गए। सूबेदार के दाहिने कंधे में से गोली आरपार निकल गई। लहनासिंह की पसली में एक गोली लगी। उसने घाव को खंदक की गीली मट्टी से पूर लिया और बाकी का साफा कस कर कमरबंद की तरह लपेट लिया। किसी को खबर न हुई कि लहना को दूसरा घाव – भारी घाव लगा है।

लड़ाई के समय चाँद निकल आया था, ऐसा चाँद, जिसके प्रकाश से संस्कृत–कवियों का दिया हुआ क्षयी नाम सार्थक होता है। और हवा ऐसी चल रही थी जैसी वाणभट्ट की भाषा में 'दंतवीणोपदेशाचाय' कहलाती। वजीरासिंह कह रहा था कि कैसे मन–मन भर फ्रांस की भूमि मेरे बूटों से चिपक रही थी, जब मैं दौड़ा–दौड़ा सूबेदार के पीछे गया था। सूबेदार लहनासिंह से सारा हाल सुन और कागजात पा कर वे उसकी तुरत–बुद्धि को सराह रहे थे और कह रहे थे कि तू न होता तो आज सब मारे जाते।

इस लड़ाई की आवाज तीन मील दाहिनी ओर की खाईंवालों ने सुन ली थी। उन्होंने पीछे टेलीफोन कर दिया था। वहाँ से झटपट दो डाक्टर और दो बीमार ढोने की गाड़ियाँ चलीं, जो कोई डेढ़ घंटे के अंदर–अंदर आ पहुँची। फील्ड अस्पताल नजदीक था। सुबह होते–होते वहाँ पहुँच जाएँगे, इसलिए मामूली पट्टी बाँध कर एक गाड़ी में घायल लिटाए गए और दूसरी में लाशें रक्खी गईं। सूबेदार ने लहनासिंह की जाँघ में पट्टी बँधवानी चाही। पर उसने यह कह कर टाल दिया कि थोड़ा घाव है सबेरे देखा जाएगा। बोधासिंह ज्वर में बर्रा रहा था। वह गाड़ी में लिटाया गया। लहना को छोड़ कर सूबेदार जाते नहीं थे। यह देख लहना ने कहा – 'तुम्हें बोधा की कसम है, और सूबेदारनीजी की सौगंध है जो इस गाड़ी में न चले जाओ।'

'और तुम?'

'मेरे लिए वहाँ पहुँच कर गाड़ी भेज देना, और जर्मन मुरदों के लिए भी तो गाड़ियाँ आती होंगी। मेरा हाल बुरा नहीं है। देखते नहीं, मैं खड़ा हूँ? वजीरासिंह मेरे पास है ही।'

'अच्छा, पर – '

'बोधा गाड़ी पर लेट गया? भला। आप भी चढ़ जाओ। सुनिए तो, सूबेदारनी होराँ को चिठ्ठी लिखो, तो मेरा मत्था टेकना लिख देना। और जब घर जाओ तो कह देना कि मुझसे जो उसने कहा था वह मैंने कर दिया।'

गाड़ियाँ चल पड़ी थीं। सूबेदार ने चढ़ते–चढ़ते लहना का हाथ पकड़ कर कहा – 'तैने मेरे और बोधा के प्राण बचाए हैं। लिखना कैसा? साथ ही घर चलेंगे। अपनी सूबेदारनी को तू ही कह देना। उसने क्या कहा था?'

'अब आप गाड़ी पर चढ़ जाओ। मैंने जो कहा, वह लिख देना, और कह भी देना।'

गाड़ी के जाते ही लहना लेट गया। 'वजीरा पानी पिला दे, और मेरा कमरबंद खोल दे। तर हो रहा है।'

मृत्यु के कुछ समय पहले स्मृति बहुत साफ हो जाती है। जन्म–भर की घटनाएँ एक–एक करके सामने आती हैं। सारे दृश्यों के रंग साफ होते हैं। समय की धुंध बिल्कुल उन पर से हट जाती है।

लहनासिंह बारह वर्ष का है। अमृतसर में मामा के यहाँ आया हुआ है। दहीवाले के यहाँ, सब्जीवाले के यहाँ, हर कहीं, उसे एक आठ वर्ष की लड़की मिल जाती है। जब वह पूछता है, तेरी कुड़माई हो गई? तब धत् कह कर वह भाग जाती है। एक दिन उसने वैसे ही पूछा, तो उसने कहा – 'हाँ, कल हो गई, देखते नहीं यह रेशम के फूलोंवाला सालू?' सुनते ही लहनासिंह को दुःख हुआ। क्रोध हुआ। क्यों हुआ?

'वजीरासिंह, पानी पिला दे।'

पचीस वर्ष बीत गए। अब लहनासिंह नं 77 रैफल्स में जमादार हो गया है। उस आठ वर्ष की कन्या का ध्यान ही न रहा। न–मालूम वह कभी मिली थी, या नहीं। सात दिन की छुट्टी ले कर जमीन के मुकदमें की पैरवी करने वह अपने घर गया। वहाँ रेजिमेंट के अफसर की चिठ्ठी मिली कि फौज लाम पर जाती है, फौरन चले आओ। साथ ही सूबेदार हजारासिंह की चिठ्ठी मिली कि मैं और बोधासिंह भी लाम पर जाते हैं। लौटते हुए हमारे घर होते जाना। साथ ही चलेंगे। सूबेदार का गाँव रास्ते में पड़ता था और सूबेदार उसे बहुत चाहता था। लहनासिंह सूबेदार के यहाँ पहुँचा।

जब चलने लगे, तब सूबेदार बेढ़े में से निकल कर आया। बोला – 'लहना, सूबेदारनी तुमको जानती हैं, बुलाती हैं। जा मिल आ।' लहनासिंह भीतर पहुँचा। सूबेदारनी मुझे जानती हैं? कब से? रेजिमेंट के क्वार्टरों में तो कभी सूबेदार के घर के लोग रहे नहीं। दरवाजे पर जा कर मत्था टेकना कहा। असीस सुनी। लहनासिंह चुप।

'मुझे पहचाना?'

'नहीं।'

'तेरी कुड़माई हो गई – धत् – कल हो गई – देखते नहीं, रेशमी बूटोंवाला सालू –अमृतसर में –

भावों की टकराहट से मूर्छा खुली। करवट बदली। पसली का घाव बह निकला।

'वजीरा, पानी पिला' – 'उसने कहा था।'

स्वप्न चल रहा है। सूबेदारनी कह रही है – 'मैंने तेरे को आते ही पहचान लिया। एक काम कहती हूँ। मेरे तो भाग फूट गए। सरकार ने बहादुरी का खिताब दिया है, लायलपुर में जमीन दी है, आज नमक–हलाली का मौका आया है। पर सरकार ने हम तीमियों की एक घँघरिया पल्टन क्यों न बना दी, जो मैं भी सूबेदारजी के साथ चली जाती? एक बेटा है। फौज में भर्ती हुए उसे एक ही बरस हुआ। उसके पीछे चार और हुए, पर एक भी नहीं जिया। सूबेदारनी रोने लगी। अब दोनों जाते हैं। मेरे भाग! तुम्हें याद है, एक दिन ताँगेवाले का घोड़ा दहीवाले की दुकान के पास बिगड़ गया था। तुमने उस दिन मेरे प्राण बचाए थे, आप घोड़े की लातों में चले गए थे, और मुझे उठा कर दुकान के तख्ते पर खड़ा कर दिया था। ऐसे ही इन दोनों को बचाना। यह मेरी भिक्षा है। तुम्हारे आगे आँचल पसारती हूँ।

रोती–रोती सूबेदारनी ओबरी में चली गई। लहना भी आँसू पोंछता हुआ बाहर आया।

'वजीरासिंह, पानी पिला' – 'उसने कहा था।'

लहना का सिर अपनी गोद में रक्खे वजीरासिंह बैठा है। जब माँगता है, तब पानी पिला देता है। आध घंटे तक लहना चुप रहा, फिर बोला – 'कौन ! कीरतसिंह?'

वजीरा ने कुछ समझ कर कहा – 'हाँ।'

'भइया, मुझे और ऊँचा कर ले। अपने पट्ट पर मेरा सिर रख ले।', वजीरा ने वैसे ही किया।

'हाँ, अब ठीक है। पानी पिला दे। बस, अब के हाड़ में यह आम खूब फलेगा। चचा–भतीजा दोनों यहीं बैठ कर आम खाना। जितना बड़ा तेरा भतीजा है, उतना ही यह आम है। जिस महीने उसका जन्म हुआ था, उसी महीने में मैंने इसे लगाया था।' वजीरासिंह के आँसू टप–टप टपक रहे थे।

कुछ दिन पीछे लोगों ने अखबारों में पढ़ा... फ्रान्स और बेलजियम... 68 वीं सूची... मैदान में घावों से मरा... नं 77 सिख राइफल्स जमादार लहनासिंह।

बेरोज़गारी

*gfj ekgu

गरीबदास जी ने मुझे चाय पर बुलाया,
अपने चारों बेटों का मुझसे परिचय कराया,
ये मेरा बड़ा लड़का है,
लन्दन से आया है, इंजीनियरिंग की डिग्री लाया है।
ये मेरा दूसरा लड़का है
इसकी पढ़ाई खास है।
इसलिए एम.बी.बी.एस. पास है।
ये मेरा तीसरा लड़का है
एम.ए. कर चुका, पी.एच.डी. कर रहा है।
वो जो टूटी चारपाई पर लेटा है
वो मेरा चौथा बेटा है।
इसका दिमाग, जरूरत से ज्यादा हाई है
पढ़ लिख नहीं पाया, इसलिए नाई है,
हेयर कटिंग सैलून चलाता है,
अच्छे–अच्छों की हजामत बनाता है।
मैंने कहा गरीबदास जी
आपने अपने तीनों बेटों को तो खूब पढ़ाया
पर मखमल में टांट का पैबन्द कहां से आया?
मैंने कहा गरीब दास जी
आप अपने घर की रैपूटेशन सम्भालिए,
इस नाई को घर से निकालिए।
गरीब दास जी बोले, मैं इस नाई को घर से निकाल तो दूं
पर ये आज–कल अपने बहुत ही काम आ रहा है।
सब तो बेरोजगार हैं, घर का खर्च यही तो चला रहा है।।

*भण्डारण एवं निरीक्षण अधिकारी, सैन्ट्रल वेअरहाउस, जनता रोड, सहारनपुर

निगमित कार्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित

केन्द्रीय भंडारण निगम के निगमित कार्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता पैदा करने एवं अधिकारियों तथा कर्मचारियों का उत्साह बढ़ाने के लिए हर वर्ष के भाँति इस वर्ष भी हिंदी दिवस एवं राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर निगमित कार्यालय सहित सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं जिसमें अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। निगमित कार्यालय में 01 सितंबर से 15 सितंबर 2015 तक स्वरचित हिंदी कहानी, स्वरचित काव्य, आशुभाषण एवं कम्प्यूटर पर यूनिकोड

हिंदी पखवाड़ा एवं राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह

टाइपिंग प्रतियोगिता तथा हिंदी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। 14 सितंबर, 2015 को हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर माननीय मंत्री जी का संदेश सभी को पढ़कर सुनाया गया। इस अवसर पर निदेशक (वित्त), निदेशक (कार्मिक) एवं हिंदी सलाहकार समिति के माननीय सदस्य द्वारा पुरस्कार वितरित किए गए। इसी प्रकार निगम के सभी क्षेत्रीयों कार्यालयों में भी कार्यशाला तथा विभिन्न विषयों पर प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं और पुरस्कार वितरित किए गए। निगम द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों से राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को बढ़ावा मिलता है।

प्रोत्साहनः सफलता हेतु एक सराहनीय कार्य

*o : .k Hkkj }kt

प्रोत्साहन किसी भी कार्य को करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति में जोश एवं उत्साह भरने का कार्य करता है। यदि देखा जाए तो हर व्यक्ति को प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है जैसे कि – बच्चे को शुरू में पैरों पर चलने में, विद्यार्थी को पढ़ाई में, बेरोजगार को रोजगार प्राप्ति में, कलाकार को अपनी कला निखारने में, यहां तक कि बीमार व्यक्ति को बीमारी से मुक्ति के लिए भी स्नेहिल प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है। बच्चों को अभिभावकों द्वारा प्रोत्साहित करना, पति–पत्नी का एक–दूसरे को प्रोत्साहित करना तथा एक दोस्त द्वारा दूसरे दोस्त को प्रोत्साहित करना आदि सफलता के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर कर आगे बढ़ने में बहुत सहायक सिद्ध होता है। इसी तरह के प्रोत्साहनों के कारण अनेक व्यक्तियों ने विद्वान, वैज्ञानिक और महापुरुषों की श्रेणी को सुशोभित किया है।

यद्यपि मानव जाति के सतत् विकास के लिए कर्म की ही प्रधानता एवं महत्ता अधिक होती है, लेकिन कर्म करने की उचित प्रेरणा भी प्रोत्साहन के द्वारा ही प्राप्त होती है। कर्म तो प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं ही करना पड़ता है, लेकिन दूसरों की प्रोत्साहन रूपी सहायता प्राप्त होने पर ही उसके कर्मों को मूर्त स्वरूप मिलता है। प्रोत्साहन हमेशा ही आगे बढ़ने के लिए दिशा देते हैं और इनसे व्यक्ति का मनोबल भी बढ़ता है। इसके अलावा अन्य व्यक्ति भी इससे प्रभावित होते हैं। अतः कहना चाहिए की प्रोत्साहन व्यक्ति के लिए अचूक दवा के समान होता है जिससे वह अपना कार्य और भी उत्साह एवं लगन से करने के लिए तत्पर रहता है। इसलिए किसी की आलोचना करने या निरुत्साहित करने के बजाए यदि उसे प्रोत्साहित किया जाए तो वह ज्यादा हितकारी होता है।

प्रोत्साहन देना सफलता हेतु एक सराहनीय कार्य है, जो हर किसी को करना चाहिए परंतु प्रोत्साहन को प्रार्थना या चापलूसी की श्रेणी में रखना गलत है। भावनात्मक रूप से सच्चे हितैषी के रूप मे दिया गया प्रोत्साहन एक ऐसा उपहार है, जिसे देने में अपनी जेब से कुछ खर्च नहीं करना पड़ता, बल्कि बदले में प्रशंसा ही मिलती है।

किसी व्यक्ति को प्रोत्साहन देने के बाद उसके चेहरे की चमक देखिए और निरुत्साहित करने के बाद उसी चेहरे की उदासी देख लीजिए। प्रोत्साहन का चमत्कार आप स्वयं समझ जाऐंगे। प्रोत्साहन जहां व्यक्ति को कर्म के लिए प्रेरित करता है, वहीं उसके गुण और व्यक्तित्व में भी निखार लाता है। इसके विपरीत हतोत्साहित किए जाने पर व्यक्ति में निहित गुणों का भी लोप होने लगता है।

प्रोत्साहन एक निःशुल्क रामबाण औषधि के समान है। आपके द्वारा दिये गये प्रोत्साहन से किसी के जीवन में अतुल्य परिवर्तन तो आ ही सकता है, साथ ही प्रोत्साहन से व्यक्ति में आत्मविश्वास भी बढ़ता है। आपकी प्रेरणा से दूसरों को प्रोत्साहन मिले एवं उनके व्यक्तित्व का विकास हो तो इससे आपको भी खुशी होगी। फिर ऐसा निःशुल्क उपहार देने के लिए हर समय एवं हर परिस्थिति में तैयार रहिए और दूसरों को प्रोत्साहित कर स्वयं भी प्रशंसा और सम्मान के पात्र बनिए।

*हिंदी अनुवादक, क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद।

बेटियाँ...

*euh"kk ih-lkuh

बेटियाँ कुछ लेने नहीं आती हैं पीहर....

बेटियाँ पीहर आती हैं, अपनी जड़ों को सींचने के लिए...

तलाशने आती हैं भाई की खुशियाँ....

वे ढूँढने आती हैं अपना सलोना बचपन....

वे रखने आती हैं आँगन में स्नेह का दीपक....

बेटियाँ कुछ लेने नहीं आती हैं पीहर....

बेटियाँ ताबीज बाँधने आती हैं दरवाजे पर, कि नजर से बचा रहे घर....

वे नहाने आती हैं ममता की निर्झरनी में....

देने आती हैं अपने भीतर से थोड़ा–थोड़ा सबको....

बेटियाँ कुछ लेने नहीं आती हैं पीहर....

बेटियाँ जब भी लौटती हैं ससुराल, बहुत सारा वहीं छोड़ जाती हैं....

तैरती रह जाती हैं घर–भर की नम आँखों में....

जब भी आती हैं वें, लुटाने ही आती हैं अपना वैभव....

बेटियाँ कुछ लेने नहीं आती है पीहर....

*वेअरहाउस सहायक–।।, क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद

ताजमहल

*ekfguh eYgk=k

मुहब्बत की सुंदर निशानी है ताज,
अमर प्रेम की एक कहानी है ताज।
प्यार का हरेक पल खूबसूरत है होता,
खूबसूरत लम्हों की निशानी है ताज।
मुहब्बत है जीवन का मकसद व मंजिल,
मुहब्बत की रूह की रवानी है ताज।
मुहब्बत मिटाने से मिटती नहीं है,
अमर प्रेम की ज़िंदगानी है ताज।
प्रेमी यहां आकर सजदा हैं करते,
उनके मंदिर व मस्जिद की रानी है ताज।
जिस्म बूढ़े होते मुहब्बत न होती,
मुहब्बत का बचपन जवानी है ताज।
विश्व के अजूबों में है नाम इसका ऊपर,
हुनर की अनोखी निशानी है ताज।
बहुत सुंदर हाथों की सुंदर कला है,
पूरी दुनिया भर में सुंदर है ताज।
मेहनत मुशक्कत दासता की नजर में,
इंसानी हुनर की कहानी है ताज।
यह विश्व की विरासत प्रदूषत न हो,
हर कीमत पर हमको बचानी है ताज।
है भारत का मान और शान हुनर की,
दुनियां वालों लिये याद सुहानी है ताज।

*वरिष्ठ निजी सहायक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली।

दूसरों को बदलने से पहले अपने को बदलो

* lrk"k 'kek

जिस प्रकार किसी भी चीज को पाने के लिए संकल्प की जरूरत होती है उसी तरह दूसरों को बदलने से पहले खुद को बदलने की जरूरत है। खुद को बदलो दुनिया स्वतः ही बदल जाएगी। हमें खुद की सोच बदलनी होगी। परिवर्तन संसार का नियम है। चाहे वह प्रकृति हो, मनुष्य हो या समय। इसका अच्छा परिणाम तभी आता है जब हम उसे केवल बाहरी तौर पर ही नहीं, बल्कि आंतरिक तौर पर करें। सकारात्मक सोच उत्थान में सहायक होती है जबकि नकारात्मक सोच पतन का कारण बनती है। दूसरों के साथ वो व्यवहार न करो जो तुम्हें स्वयं के लिए पसंद नहीं है। कहने का अर्थ, आपको इस बात के लिए सचेत होना चाहिए कि आप किस तरह की सोच उत्पन्न कर रहे हैं। यदि दूसरों के प्रति हम सकारात्मक सोच रखते हैं तो वह हमारे प्रति नकारात्मक सोच रखे, ऐसा शायद मुमकिन नहीं। यदि वह हमारे प्रति गलत सोचता भी है तो ज्यादा देर तक वह ऐसा नहीं कर पाएगा। यदि हमारी दृष्टि खोटी है तो सारी सृष्टि में हमें खोट ही नजर आएगा। अतः दृष्टि बदलो, सृष्टि अपने आप ही बदल जाएगी। रिश्तों में टकराहट न आए या मतभेद पैदा न हों, इसके लिए बेहतर यही होगा कि खुद को बदल लो। किसी दूसरे व्यक्ति के व्यवहार या सोच को बदलने के लिए कोई जादू की छड़ी हमारे पास नहीं है। जिस दिन आप दूसरों के नजरिए का फैसला करना छोड़ कर अपनी सोच का निर्धारण कर लेंगे, उसी दिन से दुनिया आपके लिए बदली हुई और खूबसूरत हो जाएगी। प्रत्येक इंसान अपनी स्थिति के हिसाब से जीता है और किसी दूसरे के हिसाब से खुद को बदलना उसके लिए मुश्किल होता है। इसलिए जब दूसरे उससे बदलने की अपेक्षा रखते हैं तो गलतफहमियां पैदा होती हैं और संबंध टूटने के कगार पर आ खड़े होते हैं। सही यही रहता है कि दूसरे की स्थितियों के अनुसार सामंजस्य बिठाया जाए। नजरिया बदलते ही चीजें अलग दिखाई देने लगती हैं। सकारात्मक सोच से लोगों की कमियों की जगह खूबियां नजर आने लगती हैं, इस बात का अनुभव हममें से हर किसी ने कभी न कभी जरूर किया होगा, पर फिर भी जब अपेक्षाएं हम पर हावी होने लगती हैं तो हम दूसरों को बदलने की कोशिश में लग जाते हैं और दुनिया को खराब मान अपने को ही नहीं, अपने आसपास के लोगों को भी दुखी करते रहते हैं। सही सोच सही दिशा दिखाती है। जिंदगी एक आईने की तरह होती है, हम जिस तरह से उसे देखते हैं, वह उसी रूप में वापस हमारे पास आती है। अतः बेहतरी के लिए जब किसी और को बदलना संभव न हो तो स्वयं को बदलना ही एकमात्र विकल्प है। यद्यपि स्वयं को बदलना कठिन मानसिक प्रक्रियाओं के दौर से गुजरना होता है परन्तु किसी भी महान लक्ष्य की प्राप्ति सरलता से नहीं होती, उसके लिए काफी मेहनत करनी पड़ती है क्योंकि सरलता से प्राप्त हुई वस्तु का कोई मोल नहीं होता है। जिस आजादी का भोग आज हम कर रहे हैं उसकी प्राप्ति भी हमें सरलता से नहीं हुई। इसीलिए आज यह आवश्यक हो गया है कि प्रत्येक व्यक्ति आत्ममंथन करे और सोचे कि चेहरे पर दाग हों तो आईने का क्या कुसूर।

अपनी खुशियों को दूसरों के बदलाव में खोजने के बजाए स्वयं को बदलें तो जिंदगी जिंदादिल हो ही जाती है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन का स्वयं वास्तुशिल्पी होता है। वह जैसा चाहता है, वैसा ही उसका निर्माण करता है। वास्तव में तब तक कुछ नहीं बदलता जब तक कि

निजी सचिव, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

हम खुद को नहीं बदलते। जिंदगी को देखने का चश्मा ही अगर गलत पहना हो तो खूबसूरत रंग बदरंग लगने लगता है, फूलों की छुअन में कांटों की चुभन का एहसास होना स्वाभाविक है। इसलिए इंसान को मन साफ रखना चाहिए और दूसरों को बदलने से पहले खुद को बदलना चाहिए। इस संदर्भ में मुझे एक बहुत ही सुंदर वाक्या याद आ रहा है–

एक बार एक राजा बहुत बीमार हो गया। किसी भी वैद्य या हकीम को रोग समझ नहीं आया। फिर किसी ने सलाह दी कि यदि राजा सिर्फ हरा रंग ही देखे तो वह ठीक हो सकता है। राजा के आदेश पर सभी चीजें हरी करवा दी गईं। यहां तक कि कपड़ों से लेकर खाने–पीने तक की चीजों में भी हरा रंग ही प्रयोग में लाया जाने लगा। एक बार एक साधु वहां से गुजरा। हर तरफ हरे रंग का आधिपत्य देखकर उसने लोगों से इसके बारे में पूछा तो उसे राजा की बीमारी के बारे में पता चला। वह साधु राजा के पास गया और कहने लगा–'आप किस–किस चीज को हरे रंग में बदलेंगे। बेहतर होगा, यदि आप चश्मा ही हरे रंग का पहन लें। फिर आपको हर चीज हरी ही नजर आएगी।' इससे यह सीख मिलती है कि सभी को बदलने के बजाए खुद को ही बदल लिया जाए तो अच्छा रहेगा।

परिंदे

*fouhr fuxe

परिंदे तो आखिर परिंदे होते हैं
न वो हिन्दू होते हैं
न वो मुसलमान होते हैं
परिंदे तो सिर्फ परिंदे होते हैं।

कभी अज़ान सुनकर उठते हैं
तो कभी घंटे–घड़ियाल सुनकर
फर्क उन्हें कुछ नहीं पड़ता, क्यूँकि
परिंदे तो सिर्फ परिंदे होते हैं।

न उनमें झूठ, न मक्कारी
न उनमें व्याभिचार, न भ्रष्टाचारी
ज़िंदगी को क्या खूब जीते हैं
परिंदे तो आखिर परिंदे होते हैं।

न कुर्सी को झगड़ते हैं
न किसी से फरेब करते हैं
वो तो कृष्ण की बाँसुरी में जीवन ढूँढ लेते हैं
क्योंकि परिंदे तो बस परिंदे होते हैं।

न दहेज लेने को परेशान होते हैं
न भ्रूण हत्या का पाप ढोते हैं
वे तो शांति के दूत होते हैं
परिंदे तो आखिर परिंदे होते हैं।

धर्म और मजहब को लड़ाकर जो मशहूर होते हैं
ताकत और सत्ता के नशे में जो चूर होते हैं
इन सबसे अनजान क्या खूब होते हैं
परिंदे तो आखिर परिंदे होते हैं।

*पूर्व प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, नवी मुंबई

भौतिक विकास और गिरते नैतिक मूल्य

*uerk ctkt

इस शीर्षक को पढ़कर आपके मन में एक पल के लिए यह विचार आया होगा कि मैं आपसे देश की अर्थव्यवस्था या मुद्रास्फीति पर चर्चा करने जा रही हूँ। पर 'नहीं', मेरा विषय यह नहीं है, मैं आपसे आज के समाज की मूलभूत समस्या पर बात करने जा रही हूँ।

हम पीछे मुड़कर देखें तो आज से लगभग 15–20 साल पहले तक अधिकतर लोग संतुष्टि का जीवन व्यतीत करते थे। सही मायनों में कहें तो 'जितनी उनकी चादर थी, उतने ही पांव पसारते थे'। कहने का अभिप्राय यह है कि लोग अपने पास जितना पैसा या जितनी वस्तुएं थीं, उनमें ही खुश रहते थे और अपने बच्चों को भी यही शिक्षा देते थे कि 'बेटा, आपके माता–पिता के पास इतना ही धन है और इनमें ही हमें अपनी खुशियाँ ढूंढनी हैं। उतने ही पैसों में वह अपने से अधिक जरूरतमंद लोगों की मदद करने को भी तत्पर रहते थे। पर आज आप अपने दिल पर हाथ रखकर बताइए कि, 'क्या आज भी हमें वही स्थिति देखने को मिलती है?' आपका जवाब भी 'नहीं' ही होगा। ऐसा नहीं है कि उस समय भ्रष्टाचार नहीं था, या लोग लालची नहीं होते थे। पर आज ऐसे लोगों का प्रतिशत बहुत अधिक बढ़ गया है और यही इंजैक्शन हमारी आने वाली नस्लों में भी स्वतः ही लगता जा रहा है। भारतीय संस्कृति से जुड़े नैतिक मूल्य, संस्कार सब कहीं खोते जा रहे हैं। रिश्ते नातों से ऊपर आज सबसे बड़ी चीज सिर्फ पैसा और सिर्फ पैसा ही है।

क्या हमने कभी सोचा है कि यह स्थिति हमारे देश में कब और कैसे आ गई? मेरे विचार से तब से जब हमें उधार की ज़िंदगी जीने में मज़ा आने लगा। शायद तब से जब हमें क्रेडिट कार्ड आदि की लत लग गई। हर चीज़ किस्तों में मिलने लगी। एक वक्त था जब हमें यह सीख दी जाती थी कि 'उधार की ज़िंदगी से तो मौत अच्छी'! उधार मांगना तो शर्म की बात थी ही और यदि उधार देने वाले ने तकाज़ा कर दिया तो ऐसा लगता था कि कहीं डूब कर मर जाएं। पर आज यदि हम देखें तो हर दूसरा व्यक्ति जब कोई वस्तु खरीदता है तो उसका यही कहना होता है कि 'लोन लेकर खरीदा है'। आज लोन या उधार लेने में किसी को कोई शर्म नहीं है बल्कि शान समझते हैं। आज तो केवल यही चिंता है कि, 'अच्छा शर्मा जी ने नयी कार 'मारूती डिज़ायर' खरीदी है तो हम क्या किसी से कम हैं, मैं भी आज ही अपनी बेटी को नयी कार 'होन्डा सिटी' लाकर दूंगा, उनसे भी बड़ी गाड़ी, आखिर हमारा भी तो कोई स्टेट्स है।' आज हम एक–दूसरे से रीस, आगे निकलने की होड़ और जलन में ही जीते जा रहे हैं और जीवन के वास्तविक आनंद से दूर होते जा रहे हैं। इस होड़ और जलन को बढ़ावा दे रही है, किस्तों और क्रेडिट कार्ड की यह नई प्रथा जिससे लोग अपनी इच्छाएं आसानी से पूरी कर लेते हैं। पहले जब हमें कोई चीज़ लेनी होती थी तो हमारे माता–पिता हमें उस चीज़ का मूल्य बताते थे और कोई भी चीज़ आसानी से नहीं दिलवाते थे। ऐसा नहीं है कि वो दिलवा नहीं सकते थे बल्कि इसलिए ताकि हमें उस चीज़ का महत्व पता चले और हमें समझ आए कि ज़िदगी इतनी भी आसान नहीं है।

आप कहेंगे कि इसमें बुराई ही क्या है, यदि हमें कोई चीज़ आसानी से मिल रही है और हमें उसके लिए

*प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

खुद को और अपने बच्चों को तरसाना नहीं पड़ रहा तो क्या समस्या है। हाँ सही है, पर इसके बाद की समस्याएं आज हमें देखने को मिल रही हैं। आज हर कोई जलन और ईर्ष्या के कारण क्रोध में रहता है, किसी को छोटे–बड़े का लिहाज नहीं है। हर कोई सोचता है, यदि दूसरे के पास पैसा और सुख–समृद्धि है तो मैं भी क्या किसी से कम हूँ। वह अपना स्टेटस बनाए रखने के लिए और उधार लेने के दलदल में फंसता चला जाता है। लोगों की सहूलियत में एक और इजाफा हुआ मल्टीनेशनल कंपनियों के इस देश में आने से। यह कंपनियां पैसा तो बहुत देती हैं पर काम भी सीमा से बढ़कर लेती हैं जिससे न तो आज के युवा वर्ग की नींद पूरी होती है और न ही उनकी इच्छाएं, जो क्रोध का कारण बनती हैं। आज जो हम आए दिन रोड रेज की खबरें सुनते हैं, उसका कारण यही है, असंतुष्टि, अनिद्रा, अनंत इच्छाएं, अहंकार, जलन, क्रोध आदि। छोटे–छोटे बच्चे भी जानते हैं कि हमारे मुँह से निकलते ही हमारे माता–पिता हमारी मांग पूरी कर देंगे। इस कारण उन्हें चीज़ों का महत्व नहीं पता रहता और यदि कहीं माता–पिता ने उनकी मांग पूरी नहीं की, तो फिर देखिए उनका गुस्सा। आज के बच्चे भी भौतिकतावादी हो रहे हैं। उन्हें केवल भौतिक सुख चाहिए। एक बच्चे से उसकी माँ ने कहा, बेटा खिलौने से आराम से खेलो नहीं तो टूट जाएगा।' उस बच्चे का जवाब था, 'मम्मी, यह टूट गया तो नया आ जाएगा, आप चिंता मत करो।' अब आप खुद ही अंदाजा लगाइए कि यदि आगे आने वाले समय में भगवान न करे आपको कोई आर्थिक तंगी का सामना करना पड़े, तो आप अपने बच्चों को कैसे संभालेंगे। बच्चों को तो छोड़िए, आपको याद ही होगा दो–तीन वर्ष पहले जब विश्व में आर्थिक मंदी छाई थी तो कितने लोगों ने हताश होकर आत्महत्या जैसा कायरतापूर्ण कदम उठाया था क्योंकि उन्होंने अपना घर, कार, टी.वी, फ्रिज आदि सब किस्तों पर ले रखा था और आर्थिक मंदी के चलते जब उन्हें नौकरी से निकाल दिया गया या उन्हें पैसा नहीं मिला तो उधार और कर्ज न दे पाने के कारण उन्होंने अपने और अपने परिवार की जीवन लीला ही समाप्त कर दी। आजकल तो प्रसिद्ध व्यक्ति भी विज्ञापनों में यही कहते नज़र आते हैं, 'और विश करो'। इस संदर्भ में आज ही मुझे व्हाट्सएप पर एक संदेश भी प्राप्त हुआ जो इस प्रकार है–

'लोग कहते हैं सहेली और हवेली
आसानी से नहीं बनती, हम कहते हैं,
बन्दे में दम होना चाहिए, सहेली फोन पे और
goyh yku i cu tkrh gA*

बचपन में दादा–दादी से हमको अच्छी–अच्छी कहानियाँ सुनने को मिलती थीं। उनमें से कुछ कहानियाँ प्रेरणादायी होती थीं, कुछ परोपकारी होती थीं, कुछ जीवों पर दया करने वाली होती थीं, कुछ देवी देवताओं की होती थीं और कुछ क्षेत्रीय कहानियाँ होती थीं परन्तु सबका उद्देश्य हमारे अन्दर अच्छे संस्कार डालना होता था। कहते हैं कि जब बच्चा छोटा होता है तो उस समय उसका मस्तिष्क बिल्कुल शून्य होता है, आप उसको जैसे संस्कार और शिक्षा देंगे वो उसी राह पर आगे बढ़ता है। बाल्यकाल में बच्चे को संस्कारित करने में घर के बुजुर्गों का, माता पिता का बहुत बड़ा हाथ होता है। आज भी यदि हमारे कदम अपने पथ से विचलित होने का प्रयास करते हैं तो वे पुरानी कही हुई बातें याद आ जाती हैं, जो हमें सही पथ पर ले जाने का प्रयास करती हैं।

आज बच्चों को क्या संस्कार और शिक्षा दी जा रही है इसका पता इस बात से चलता है कि किसी सम्माननीय व्यक्ति ने एक 05 साल के बच्चे से दुर्गा माँ की फोटो की ओर इशारा करते हुए पूछा, 'बेटा ये कौन है' तो बच्चे का जवाब था 'लोयन वाली औरत, जो इस लोयन के ऊपर बैठी है', किसी दूसरे सम्मानीय व्यक्ति ने गणेश भगवान् के बारे में पूछा तो बच्चे ने गणेश जी को...'एलीफैंट गॉड'..... .कहा। अब आप ही बताएं इसमें उस बच्चे का क्या कसूर

है? जब कभी भी उस परिवार के सदस्य ने उसको ये बताने की कोशिश नहीं की कि बेटा ये दुर्गा माता हैं या ये गणेश भगवान हैं तो उसको कैसे पता चलता? एक बार एक मंदिर में बच्चे को उसकी माँ शिवलिंग को दिखाते हुए समझा रही थी, 'देखो बेटा 'ब्लैक स्टोन', इस पर वाटर डालो'। अब बच्चे को क्या पता, उसके लिए तो वह एक काला पत्थर है। यह तो माँ का फर्ज था कि वह उसे समझाती कि बेटा यह शिव जी का प्रतीक शिवलिंग है, जिन पर जल चढ़ाना चाहिए। भक्ति की भावना जगाना तो माँ का कार्य था। पत्थर में भगवान को दिखाना तो हमारा ही कार्य है। भौतिकता की चकाचौंध में नैतिक मूल्यों में गिरावट आती जा रही है। आज अन्तरात्मा की आवाज न सुनकर केवल भौतिक सुविधाओं की ओर ध्यान दिया जा रहा है। आज नैतिक मूल्यों के अभाव में परिवार टूट रहे हैं। देश के पूर्व प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री, अटल जी ऐसे नेता थे जो नैतिक मूल्यों को महत्व देते थे।

आज के संदर्भ में स्थिति बिलकुल भिन्न हो गई है। नैतिक मूल्यों के अभाव के कारण व्यक्ति के चरित्र में गिरावट आती जा रही है, आज धन–बल के कारण भी अपराधों का ग्राफ हर वर्ष बढ़ता जा रहा है। चोरी, डकैती, बलात्कार, हत्याएं इसलिए हो रही हैं कि व्यक्ति स्वयं के जीवन में उच्च आदर्शों, नैतिक मूल्यों को जीवन में स्थान नहीं दे पा रहा है। इसलिए आज उच्च आदर्शों के लिए बच्चों को अच्छे संस्कार दिए जाने की नितान्त आवश्यकता है, हमें अपने चरित्र से, व्यवहार से बच्चों के सामने नैतिक मूल्यों के उदाहरण प्रस्तुत करने की ज़रूरत है। आज के बच्चे ही कल के भविष्य हैं, अतः शिक्षा के साथ–साथ नैतिक मूल्यों को जीवन में स्थान दें तथा हर कार्य अपनी अंतरात्मा एवं उच्च आदर्शों को ध्यान में रखकर करें। परिवार बच्चों की प्रथम पाठशाला है, अतः हर माता–पिता को स्वयं का आचरण शुद्ध सरल–पवित्र, मर्यादापूर्ण रखना चाहिए। आज जो संस्कार बच्चों में स्थापित होंगे वो ही आगे चलकर देश और समाज के, परिवार के विकास में सहायक होंगे। ईमानदारी, सत्यता, विवेक, करुणा, प्रलोभनों से दूर रहना, पवित्रता ये नैतिक मूल्यों के आदर्श तत्व हैं, इन आदर्श तत्वों (सिद्धांतों) से जीवन में आध्यात्मिकता का जन्म होता है। एक आदर्श परिवार या देश के निर्माण हेतु परिवार के सभी सदस्यों या देश के सभी नागरिकों में शिष्टाचार, सदाचार, त्याग, मर्यादा, अनुशासन, परिश्रम की आवश्यकता है.। कन्फ्यूशियस के अनुसार – "यदि आपका चरित्र अच्छा है तो आपके परिवार में शांति रहेगी, यदि आपके परिवार में शांति रहेगी तो समाज में शांति रहेगी, यदि समाज में शांति रहेगी तो राष्ट्र में शांति रहेगी।'

देश हो, समाज या फिर मनुष्य, सबके सर्वांगीण विकास के लिए केवल भौतिक विकास नाकाफी है, इसके साथ–साथ नैतिक विकास भी जरूरी है। महात्मा गांधी का पूरा जोर इसी बात पर था कि मनुष्य का भौतिक विकास के साथ–साथ नैतिक रूप से सुदृढ़ होना आवश्यक है। भारत में तो सूक्ति भी प्रचलित है:

जिसका धन गया, समझो कुछ नहीं गया।

जिसका स्वास्थ्य गया, समझो कुछ गया।

जिसका चरित्र गया, समझो उसका सब कुछ गया।

स्पष्ट है कि चरित्र जाने (नैतिक मूल्यों के पतन) के बाद मनुष्य के पास कुछ शेष नहीं रह जाता। ऐसे मनुष्य के लिए भौतिक विकास भी सही मायने में निरर्थक रह जाता है। रावण एक प्रकांड विद्वान था और ऋषिकुल में पैदा हुआ था। लेकिन, जैसे ही रावण सांसारिक प्रसाधनों के भोग में डूब गया और नैतिक मूल्यों की अनदेखी कर दी, वह समाज कंटक बन गया। अंहकारी होकर रावण ने भौतिक संसाधनों का उपयोग समाज पर अत्याचार करने में किया। आखिर में नैतिक मूल्यों के स्वामी मर्यादा पुरुषोत्तम राम को उसका अंत ही करना पड़ा। यही स्थिति कंस के साथ हुई। आचार्य चाणक्य ने भी एक साधारण से बालक को महान सम्राट चंद्रगुप्त बनाकर नैतिक मूल्य खो चुके मगध के राजा घनानंद का दंभ धूल में मिलाया। बहरहाल, बात इतनी–सी है कि भौतिक विकास देश और मानव समाज के लिए जितना जरूरी है उससे कहीं अधिक नैतिक मूल्यों का विकास और सुदृढ़ीकरण जरूरी है। यह कहना उचित होगा कि – 'नैतिक मूल्यों के बिना भौतिक विकास लोक कल्याणकारी नहीं हो सकता'। लोक कल्याण के लिए आदर्श व्यक्तित्व ज़रूरी है और इच्छाएँ कम एवं आत्मसंतोष की भावना मन में होने से आदर्श व्यक्तित्व बनता है और जीवन में खुशहाली आती है।

प्याज का छिलका

*feJh yky ehuk ^^,dy0;^^

शाला जाने से पहले बिटिया कचरा बीनने जात है,
कचरे के साथ प्याज का छिलका बीन लात है।
छिलके के माछ–भात में तड़का लगात हैं,
और उसे बहुत मस्ती से मन भरकर खात है।।

ऊँचे मकानों से छौंक की खुशबु तो आत हैं,
पर कचरे में प्याज का छिलका नहीं पात है।
सो बिना प्याज के छौंक के मछली–भात बनात है,
शायद इसी लिये बिटिया रहती कुछ उदास है।।

नहा–धोकर, कुछ टन टन कर, कुछ मन में गुनगुनात है,
नन्हें–मुन्ने हाथों से भगवान को भोग लगात है।
है भगवान, तू मेरा इत्ता–सा काम करा देना,
कल के कचरे में तुम थोड़ा प्याज के छिलके गिरा देना।।

कार में एक अंकल बोले, बेटा!! क्या बात है?
पूछ लिया कचरे में अंकल छिलका नहीं आत है।
हंस कर बोले किचन में प्याज तो बहुत आत है,
पर अब बेटा, प्याज को छीला नहीं जात है।।

*क्षेत्रीय प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर

मेरी आवाज़ सुनो

*u=iky 'kek

मेरी किलकारी सुनकर,
मत घबराना तुम।
आने दो मुझको, मत रोको,
न कुचलो मुझको, दानव तुम।।

अंश काट कर अपना तुम,
कैसे वंश चलाओगे।
वंशजों के वंशज को,
फिर कैसे आगे बढ़ाओगे।।

धरती के फूलों को खिलने दो,
न कुचलो नन्हीं कलियों को।
उनको भी जग में आने दो,
करने दो रोशन गलियों को।।

बन कर फूल खिलेगी एक दिन,
जीवन मुझको पाने दो।
आने दो मुझको, मत रोको,
जीवन की दुनिया में आने दो।।

वंश चलेगा किसी के घर का,
नाम तुम्हारा भी होगा।
बेटी के साहस को देखो,
दो घर का उजियारा होगा।

मुझसे मोहब्बत कभी कम न करना,
दिल की आवाज अनसुनी न करना।
मेरी आंखों में झांकों, खुशी के साथ गम भी हैं,
ज़माने के ग़म सहकर, मुस्कराने का दम भी है।।

जिंदगी के हर पल तुम्हारे साथ रहना है,
खुद मरकर भी दूसरों को जीवन देना है।
मुझसे मुझको पहचानो, कोशिश करो,
शक्ति का अंबार है, जिसकी शक्ति से चलता संसार है।।

हे मानव! मेरी किलकारी को मत रोको,
ना कुचलो मुझको तुम दानव।
वरना पूरी व्यवस्था कुचलेगी,
न होगा पृथ्वी पर कोई मानव।।

*भण्डारण एवं निरीक्षण अधिकारी, कंटेनर फ्रेट स्टेशन, नवी मुंबई

अच्छाई अभी ज़िंदा है ....

*j[kk nc

हम जिस हाईटैक युग में जी रहे हैं उसमें अच्छाई शब्द कभी–कभी पराया सा लगता है। क्या वाकई इस शब्द ने अपने मायने खो दिए हैं या अभी कुछ जिंदा है। मैं एफएम सुनने की बहुत शौकीन हूं और सुबह ऋचा अनिरुद्ध का एक शो मैं रोज सुनती हूं। इस शो मे कई लोग बुजुर्गों के लिए आश्रम और जरूरतमंद बच्चों को कई सुविधा बिना किसी सरकारी सहायता के पहुंचा रहे हैं। ये शो पूरी तरह से दिल्ली के हीरो का शो है। हीरो शब्द सुनते ही हमारा ध्यान फिल्म इंडस्ट्री की तरफ जाता है। लेकिन मेरा मानना है कि जो बिना किसी स्वार्थ के समाज के सुधार और कल्याण में अपना जीवन समर्पित कर देते हैं, वे ही असली हीरो हैं। मुझे लगता है कि इस संवेदना शून्य समाज में अगर आज भी कुछ लोगों ने बिना स्वार्थ के अच्छाई की मशाल जलाई है तो वो काबिले तारीफ हैं और हम सभी को उन्हें भी सम्मानित करना चाहिए और एफएम ने ये बहुत ही अच्छी पहल की है। इस दिशा में टीवी में भी श्री अमिताभ बच्चन का स्टार प्लस चैनल पर एक शो शुरू हुआ है जिसमें समाज के ऐसे ही कई असली हीरो सम्मानित किए जा रहे हैं जो समाज में दीन–दुखियों की सहायता के लिए अपना तन–मन और धन अर्पित कर रहे हैं।

मैंने देखा एक पति–पत्नी असहाय बुजुर्गों को निशुल्क खाना सप्लाई करते हैं और वो भी एक मुस्कान के साथ उनके घर जाकर। मैं महसूस कर सकती हूं जिनको ये दंपत्ति सुविधाएं दे रहे हैं उनके दिलों से उनके लिए करोड़ों दुआएं रोज निकलती होंगी और अपने बच्चों के लिए वे अपने मन में क्या ताने–बाने बुनते होंगे इसका अंदाजा भी हम लगा सकते हैं। इसी प्रकार मुंबई के एक व्यक्ति कैंसर पीड़ित जरूरतमंद लोगों को अपने अपार्टमैंट में निःशुल्क रखकर उन्हें दैनिक जरूरतों के लिए आर्थिक सहायता भी दे रहे हैं।

इसी प्रकार एक लड़की ने रेलवे स्टेशन पर नेत्रहीन एवं यंत्रों को बजाते हुए मूक एवं बधिर लोगों को देखा और उसके मन में उनके लिए कुछ ऐसी भावना जागी कि उसने उन्हें इकट्ठा करके एक संस्था बनाई और उन कलाकारों ने एक शो में बालीवुड के दो संगीतकारों एवं गायकों के साथ लोगों की उम्मीद से परे स्टेज प्रोग्राम दिया क्योंकि नेत्रहीन एवं मूक–बधिर लोगों को इशारे एवं रिदम समझाना वाकई एक मुश्किल कार्य था। बालीवुड की हस्तियां भी उनके साथ गाते हुए अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रही थीं क्योंकि उनकी परफारमैंस वाकई काबिले तारीफ थी। उस समय सभी की आंखें नम हो गईं जब इस ग्रुप के एक साथी ने कहा कि जब ये मैडम हमारे पास आईं और इन्होंने हमें अपनी संस्था से जोड़ा तो हमें लगा कि यह बस कह रही हैं, करेंगी कुछ नहीं लेकिन जब इन्होंने अमिताभ बच्चन के शो में प्रोग्राम की बात की तो हम सभी ने अपने फोन बंद कर दिए कि हमसे मज़ाक कर रही हैं। लेकिन आज जो इन्होंने किया वो तो कभी हम सपने में भी नहीं सोच सकते थे। सड़क की धूल को इन्होंने आसमान दे दिया। वो क्षण दिल को छूने वाला था। हमारे इसी समाज में हमारे आसपास ऐसी बहुत सी औलादें हैं जो अपने बुजुर्गों को वृद्धाश्रम का रास्ता दिखा रही हैं और कुछ तो उन्हीं के घर में उन्हें नरक का जीवन जीने पर मजबूर कर रहे हैं। ऐसे में कोई पराया किसी असहाय बुजुर्ग की निस्वार्थ भाव से सेवा करता है तो वाकई आंखें भर आती हैं।

हमारे बुजुर्ग हमारे घर के वटवृक्ष हैं और उन्हें उन्हीं की बसाई हुई धरा से अलग कर वृद्धाश्रम भेजना संवेदनहीन लोगों का बेहद घिनौना चेहरा है। ऐसे शो के माध्यम से मैं बिना व्यक्तिगत रूप से मिले, समाज के ऐसे कई हीरो से मिली जिन्हें किसी और से जानकर लगा कि मैं गलत थी। आज भी समाज में कई ऐसे लोग हैं जिन्होंने अच्छाई को अभी भी जिंदा रखा है और जिन्हें मैं पूरे दिल से सलाम करती हूं। शायद उन्हीं के पुण्य कर्मों से ये धरा कायम है वरना रोज की खबरें तो बस समाज के घिनौने चेहरे को ही बयां कर पाती हैं। ये अच्छाई की लौ हम सभी के दिलों में कहीं छुपी हुई है, बस जरूरत है उसे हवा दिखाने की ताकि ये आग भड़के और इस आग से समाज में कई जरूरतमंद घर और कई जीवन रोशन हों तो ईश्वर की सबसे अनमोल रचना अर्थात मानव जीवन सार्थक बन सके और हमारे जाने के बाद कोई हमारे बारे में भी गर्व से यह कह सके कि

फरिश्तानुमा था यार मेरा, हर बशर से जुदा था यार मेरा
खूबसूरत जमाने में थे बड़े, खूबसीरत बड़ा था यार मेरा।।

*सहायक प्रबंधक, (राजभाषा) निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), दिल्ली द्वारा भंडारण भारती पत्रिका को श्रेष्ठ पत्रिका पुरस्कार

निगम के लिए यह हर्ष और गौरव का विषय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), दिल्ली द्वारा आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में निगम की त्रैमासिक पत्रिका भंडारण भारती को वर्ष 2014–15 के लिए श्रेष्ठ पत्रिका प्रकाशन हेतु द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। यह पुरस्कार स्कोप ऑडिटोरियम, लोधी रोड, नई दिल्ली में आयोजित समारोह में संयुक्त सचिव (राजभाषा) सुश्री पूनम जुनेजा से निगम के प्रबंध निदेशक श्री हरप्रीत सिंह ने प्राप्त किया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), दिल्ली

(राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार)

सचिवालय : स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड

16वीं तल, स्कोप मीनार, कोर-2, नार्थ टॉवर, लक्ष्मी नगर डिस्ट्रिक्ट सेंटर, दिल्ली 110 092

गृह पत्रिका पुरस्कार

सहर्ष प्रमाणित किया जाता है कि .... केंद्रीय भण्डारण निगम .... की गृह पत्रिका .... भण्डारण भारती .... को दिल्ली स्थित उपक्रमों की गृह पत्रिका प्रतियोगिता में वर्ष .... 2014 - 15 .... का .... द्वितीय .... पुरस्कार प्रदान किया गया।

सदस्य सचिव नराकास (उपक्रम), दिल्ली	निदेशक (कार्यान्वयन) राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय, नई दिल्ली	अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), दिल्ली

दिनांक : ....

निगम की वार्षिक साधारण बैठक की झलकियां

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरू तथा दिल्ली का राजभाषा निरीक्षण

माननीय संसदीय राजभाषा की दूसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 03.09.2015 को क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरू तथा दिनांक 29.09.2015 को क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली का राजभाषा निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर श्री हरप्रीत सिंह, प्रबंध निदेशक तथा श्री जे.एस. कौशल, निदेशक (कार्मिक) ने समिति के उपाध्यक्ष डॉ. सत्यनारायण जटिया तथा अन्य गणमान्य सांसदों का बुके से स्वागत किया। माननीय समिति ने निरीक्षण के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलूरू तथा दिल्ली में राजभाषा कार्यान्वयन में हुई प्रगति पर संतोष व्यक्त करते हुए अपने बहुमूल्य सुझाव भी दिए। इस अवसर पर आयोजित राजभाषा प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए माननीय सदस्यों ने प्रसन्नता व्यक्त की।

क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित हिंदी कार्यशाला की झलकियां

क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित हिंदी कार्यशाला की झलकियां

निगम की अन्य गतिविधियां

सैंट्रल वेअरहाउस, दुग्गीराला, हैदराबाद क्षेत्र में दिनांक 20.08.2015 को आयोजित किसान प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम के अवसर पर किसानों को प्रमाण–पत्र प्रदान करते हुए क्षेत्रीय प्रबंधक, हैदराबाद

आईसीडी, सहारनपुर का दौरा करते हुए प्रधान आयुक्त, सैंट्रल एक्साइज एवं कस्टम, मेरठ रेंज

जुबान

*nojkt flg ^no^

लोग कहते है, कि जुबान है
तो फ़िसल ही जाती है।
मगर बेजुबान तो
निगल जाती है।।
जुबान ही अपनों से
दूर करती है।
फिर, दूरियां दूर से
मज़बूर करती है।।
जुबान ही लोगों को
गले लगाती है।
जुबान ही लोगों को
तले बैठाती है।।
जुबान ही लोगों को
दोस्त बनाती है।
जुबान ही लोगों को
दुश्मन बनाती है।।
...अरे ये तो जुबान है
फ़िसल ही जाती है

जुबान के चलते
पराए अपने होते हैं।
जुबान के चलते
अपने पराए होते हैं।।
ये कभी तैरा देती है
तो कभी डुबो देती है
...अरे ये तो जुबान है
फ़िसल ही जाती है
जुबान की ख़ातिर लोग
शैतान होते हैं।
जुबान की ख़ातिर लोग
भगवान होते हैं।।
जुबान पर ही लोग
कुर्बान होते हैं।
बिन जुबान लोग
गुमनाम होते हैं।।
जुबान तो सदा
लचीली होती है।
जुबान ही सदा
रसीली होती है।।
जुबान ही गुस्सा आने पर
ज़हरीली होती है।
जुबान तो जुबान है
बस जुबान होती है।
...अरे ये तो जुबान है
फ़िसल ही जाती है

जुबान खोलने से पहले
सबको सोचना चाहिए।
अशान्ति के शब्दों को
सदा रोकना चाहिए।।
जुबान की ताकत को
सदा आंकना चाहिए।।
दूसरों की भावनाओं को
भी भांपना चाहिए।।
जैसे बच्चे की जुबान
अपनी होती है।
औरों के लिये
तो कथनी होती है।।
सरस्वती आने पर
कल्याणी होती है।
तीखी होने पर
तूफानी होती है।।
...अरे ये तो जुबान है
फ़िसल ही जाती है
जुबान जवानी में
अरमान होती है।
जुबान बुढ़ापे में
फरमान होती है।।
जुबान बचाने में
वरदान होती है।
जुबान ही बचपन में
नादान होती है।।
मगर, जुबान तो जुबान है
बस जुबान होती है।
जुबान से ज़ग में
साहस बढ़ता है
बिन सच्चाई जग में
परिहास बढ़ता है
...अरे ये तो जुबान है
फ़िसल ही जाती है

जुबान पर ही लोगों का
व्यापार चलता है
जुबान पर ही लोगों का
व्यवहार चलता है
जुबान पर ही लोगों के
लगाम लगती है
जब ये ज़हर और आग उगलती है
दुःख–सुख में लोगों की
जुबान बदल जाती है
ये जैसे आती है
वैसे ही चली जाती है
देव तू क्यों घबराता है
आज लोगों की पंचायत
निर्णायक पंचायत नहीं
बल्कि, सांपों की पंचायत है
जिसमें जुबान की लपा–लपी
के सिवाए
और कुछ नहीं होता
इसलिए...
...अरे ये तो जुबान है
फ़िसल ही जाती है

*वेअरहाउस प्रबन्धक, सैन्ट्रल वेअरहाउस, गाजियाबाद

निगम की टेबल टेनिस टीम ने टूर्नामेंट जीता

*jkt ho fouk; d

केन्द्रीय भंडारण निगम की टेबल टेनिस टीम ने शिमला में दिनांक 21.08.2015 से 24.08.2015 तक आयोजित हॉट वैदर टेबल टेनिस टूर्नामेंट जीता

- ❖ सुश्री कृतिका मलिक ने शिमला हॉट वैदर टी.टी. टूर्नामेंट में गर्ल्स, वूमन एण्ड वूमैन डबल्स जीता।
- ❖ सुश्री सृष्टि गुप्ता ने उक्त टूर्नामेंट में यूथ गर्ल्स एवं वूमैन डबल्स जीता।
- ❖ सुश्री जागृति विरमानी उक्त टूर्नामेंट में वूमैन्स फाइनल में अविजित रही।
- ❖ श्री देव खण्डेलवाल ने उक्त टूर्नामेंट में ''यूथ ब्वाइज'' जीता।

- ❖ श्री सिद्धान्त त्यागी ने उक्त टूर्नामेंट में 'जूनियर ब्वाइज' जीता। इसके अतिरिक्त
- ❖ सुश्री कृतिका मलिक ने चंडीगढ़ में दिनांक 29 सितंबर से 01 अक्तूबर, 2015 तक आयोजित ^^b-,Q-,l-vk-Vh-Vh- VukeiV^^ में ^^oeu flxy VkbVy^^ जीता।
- ❖ सुश्री सृष्टि गुप्ता ने उक्त टूर्नामेंट में ''गर्ल्स सिंगल टाइटल'' जीता।
- ❖ निगमित कार्यालय के वित्त विभाग में कार्यरत श्री सुशील टेकचन्दानी ने चंडीगढ़ में आयोजित उक्त ई.एफ.एस.ओ.टी.टी. टूर्नामेंट में ''मास्टर्स सिंगल टाइटल'' जीता।

स्वतत्रंता दिवस के अवसर पर आयोजित बैडमिंटन प्रतियोगिता के प्रतिभागियों के साथ निगम के प्रबंध निदेशक, निदेशक (कार्मिक), वरिष्ठ अधिकारीगण एवं एलपीएआई के अधिकारियों का सामूहिक फोटोग्राफ

*सहायक महाप्रबंधक (प्रचार), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

निगम का तुलनात्मक कार्य-निष्पादन

दिनांक	*क्षमता (लाख टनों में)*	*क्षमता उपयोग*	*प्रतिशतता*
01.08.2014	104.76	85.10	81
01.07.2015	117.90	99.51	84
01.08.2015*	117.52	98.37	84
01.08.2014	103.91	82.41	79
01.08.2015	117.15	97.02	83
01.09.2015*	116.97	96.00	82
01.10.2014	102.88	81.12	79
01.09.2015	116.87	95.27	82
01.10.2015*	116.87	92.98	80

*(अतंतिम)

जुलाई से सितम्बर, 2015 के दौरान आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र.सं.	**कार्यक्रम का शीर्षक**	**अवधि**
1.	गुणवत्ता नियंत्रण	06–08 जुलाई, 2015
2.	वेअरहाउस निरीक्षण	13–15 जुलाई, 2015
3.	155वां अखिल भारतीय वेअरहाउसिंग प्रशिक्षण कार्यक्रम	20–30 जुलाई, 2015
4.	आईओ/वरिष्ठ अधिकारियों के साथ इंटरैक्टिव सत्र	28 जुलाई, 2015
5.	प्रबंधन प्रशिक्षुओं के लिए प्रवेश प्रशिक्षण	31 जुलाई से 19 अगस्त 2015
6.	मैनटोरिंग प्रोसेस	07 अगस्त, 2015
7.	ई–टेडंरिंग/ई–प्रोक्यूरमेंट	27–28 अगस्त, 2015
8.	156वां अखिल भारतीय वेअरहाउसिंग प्रशिक्षण कार्यक्रम	07–17 सितंबर, 2015
9.	प्रशासनिक सतर्कता का ओरिएन्टेशन	21–23 सितंबर, 2015
10.	गुणवत्ता नियंत्रण	28–30 सितंबर, 2015

सेवानिवृत्ति के अवसर पर निगम परिवार अपने निम्नलिखित अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सुखद भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य एवं समृद्धि की कामना करता है

(दिनांक 01 जुलाई, 2015 से 30 सितम्बर, 2015 तक सेवानिवृत्त अधिकारी एवं कर्मचारी)

क्र.सं.	नाम सर्वश्री/श्रीमती	पदनाम	तैनाती स्थान	क्षेत्र
1	बी.के.शर्मा	स.अभि. (सिविल)	ओखला–।	दिल्ली
2	रमेश चन्द	समप्र (सा.)	नि.का.(कार्मिक विभाग)	नि.का.
3	राजकुमार	समप्र (तक)	नि.का.(तक. विभाग)	नि.का.
4	जगजीवन प्रसाद	आर्किटेक्ट सहायक	क्षे.का.–लखनऊ	सीसी दिल्ली
5	सुदिप्ता पाल	उ.म.प्र.(लेखा)	सीआरडब्ल्यूसी	नि.का.
6	रामनिवास मीना	महा. प्र. (सा.)	नि.का.(वा. विभाग)	नि.का.
7	एस.सी.शुक्ला	कनि. अधीक्षक	सहारनपुर बीडी	लखनऊ
8	बाबू सिंह	कनि. अधीक्षक	चंदौसी–।	लखनऊ
9	ए. गुणासेखरन	कनि. अधीक्षक	त्रिचि	चेन्नई
10	पी.सी.घोष	कनि. अधीक्षक	हजारीबाग	पटना
11	टी.एम.जे. थंगाराज	कनि. अधीक्षक	चोरोम्पेट	चेन्नई
12	विजयी शंकर	कनि. अधीक्षक	क्षे.का.–लखनऊ	लखनऊ
13	जयप्रकाश	कनि. अधीक्षक	गन्नौर	पंचकुला
14	रामपति वर्मा	कनि. अधीक्षक	शाहगंज	लखनऊ
15	धर्म पाल	कनि. अधीक्षक	गोरखपुर	लखनऊ
16	बी. चन्द्रशेखर	कनि. अधीक्षक	राजमुंद्री	हैदराबाद
17	बालाजी चतुर्वेदी	समप्र (लेखा)	क्षे.का.–लखनऊ	लखनऊ
18	आर.के.श्रीवास्तव	भं. एवं निरी. अधिकारी	क्षे.का.–अहमदाबाद	अहमदाबाद
19	जी. दस्तागिर	भं. एवं निरी. अधिकारी	नांदेड़	मुम्बई
20	जे.पी.एन. सिंह	भं. एवं निरी. अधिकारी	शाहजहांपुर	लखनऊ
21	एम. वेकेन्टेशवरराव	भं. एवं निरी. अधिकारी	पैडाकाकानी	हैदराबाद
22	रमेश कुमार	भं. एवं निरी. अधिकारी	नरायणगढ़	पंचकुला
23	एम. विद्यासागर	भं. एवं निरी. अधिकारी	देवनगिरी	बंगलौर
24	एम. डब्ल्यू. बेग	भं. एवं निरी. अधिकारी	गाजियाबाद–।	लखनऊ
25	देवी शरण शर्मा	अधीक्षक	आईसीडी– पटपडगंज	दिल्ली
26	धीरेन्द्र सिंह पुंडीर	अधीक्षक	शाहगंज	लखनऊ
27	एम.के. सिंधवानी	अधीक्षक	नि.का.(वित्त विभाग)	नि.का.
28	सतीश कुमार शर्मा	अधीक्षक	क्षे.का.–दिल्ली	दिल्ली
29	डी.एस. सिसोदिया	अधीक्षक	आईसीडी– पटपडगंज	दिल्ली
30	सुदर्शन मालही	अधीक्षक	आईसीडी– पटपडगंज	दिल्ली
31	विवेक गुप्ते	अधीक्षक	कोटपुतली	जयपुर
32	एस.के. बतेरिया	तक. सहायक	नैनी	लखनऊ
33	रतनलाल	वे.स.–।	रामपुर	लखनऊ
34	सरोज मिश्रा	वे.स.–।	क्षे.का.–जयपुर	जयपुर
35	लक्षमण दास चंदानी	लेखाकार	क्षे.का.–भोपाल(आईए)	भोपाल
36	वी.बी.सिंह	अ.अभि (ई)	क्षे.का.–मुम्बई	मुम्बई
37	वी.रामाचन्द्रन	कनि. अधीक्षक	सीएफएस– विरूगमबक्कम	चेन्नई
38	राम ज्ञान राम	कनि. अधीक्षक	बस्ती	लखनऊ

39	एस.ए.बदामी	कनि. अधीक्षक	भावनगर	अहमदाबाद
40	मंजुला बेन के वेगदा एमएस	कनि. अधीक्षक	क्षे.का.–अहमदाबाद	अहमदाबाद
41	रीनादेव	कनि. अधीक्षक	क्षे.का.–लखनऊ	लखनऊ
42	एस. सेन्थामिल सलवाम	कनि. अधीक्षक	त्रिचि	चेन्नई
43	मोहिन्द्र सिंह	कनि. अधीक्षक	रोहतक	पंचकुला
44	रामपाल	कनि. अधीक्षक	हरदौई	लखनऊ
45	जे.सी.पंत	भं. एवं निरी. अधिकारी	क्षे.का.–लखनऊ	लखनऊ
46	रविन्द्र कुमार गर्ग	भं. एवं निरी. अधिकारी	नि.का.(सतर्कता विभाग)	नि.का.
47	जय प्रकाश	भं. एवं निरी. अधिकारी	मण्डी आदमपुर	पंचकुला
48	एस. संजीवा रया चार	अधीक्षक	पीसीएस– बंगलौर	बंगलौर
49	ओम प्रकाश गुप्ता	अधीक्षक	मौरेना–।।	भोपाल
50	आई रमेश बाबू	अधीक्षक	सेदाम	बंगलौर
51	आईसीएल करण	अधीक्षक	सीएफएस– डी नोड	नई मुम्बई
52	ब्रिजेन्द्रनाथ शर्मा	अधीक्षक	क्षे.का.–भोपाल	भोपाल
53	राजेश शर्मा	अधीक्षक	नि.का.(कार्मिक विभाग)	नि.का.
54	एम.पी.सिंह सोलंकी	अधीक्षक	झांसी	लखनऊ
55	जी.ई.अंगादी	वे.स.–।	गड़ग–।	बंगलौर
56	मोहर सिंह	वे.स.–।	श्रीगंगानगर–।	जयपुर
57	एम भास्कर राव	वे.स.–।	काकीनाड़ा	हैदराबाद
58	सूर्य पाल	वे.स.–।	क्षे.का.–लखनऊ	लखनऊ
59	गिरिजा एस नायर	वे.स.–।	इडाथला	कोच्चि
60	के.सी. भट्टाचार्य	वे.स.–।	अगरतल्ला (एच)	गुवाहाटी
61	उमा शर्मा	लेखा	क्षे.का.–पंचकुला	चंडीगढ़
62	परमजीत कौर	सहा. प्रबं (सा.)	आईसीडी– पटपडगंज	दिल्ली
63	जे.के.शर्मा	उमप्र (तक)	नि.का.(बी एण्ड सी विभाग)	नि.का.
64	टी.के. मलिनी	कनि. अधीक्षक	क्षे.का.–चेन्नई	चेन्नई
65	सी.पी. श्रीवास्तव	कनि. अधीक्षक	झांसी	लखनऊ
66	सैलेन बैनर्जी	कनि. अधीक्षक	सीएफएस– कोलकाता	कोलकाता
67	यू.एस.सहरावत	कनि. अधीक्षक	बारही	पंचकुला
68	आर.एन.शर्मा	कनि. अधीक्षक	नोएडा	दिल्ली
69	महारानी शर्मा	भं. एवं निरी. अधिकारी	नि.का.(तक. विभाग)	नि.का.
70	अमर सिंह बौद्ध	भं. एवं निरी. अधिकारी	आर पी. बाग	दिल्ली
71	महक सिंह	भं. एवं निरी. अधिकारी	गुडगांव	दिल्ली
72	यशपाल ढल	भं. एवं निरी. अधिकारी	ओखला–।	दिल्ली
73	एच.एन. बासू	भं. एवं निरी. अधिकारी	क्षे.का.–कोलकाता	कोलकाता
74	जे.बी.उत्तम	भं. एवं निरी. अधिकारी	सोनीपत	पंचकुला
75	हरि किशन	अधीक्षक	चिरगांव	लखनऊ
76	एच. वेंकेटेशवरराव	अधीक्षक	सारंगपुर	हैदराबाद
77	एच.जे. चलियावाला	अधीक्षक	आईसीडी– दशरथ	अहमदाबाद
78	बी.एल. गुप्ता	अधीक्षक	नि.का.(तक. विभाग)	नि.का.
79	अशोक कुमार	अधीक्षक	नि.का.(वा. विभाग)	नि.का.
80	एस सेलवाराजू	तक. सहायक	त्रिचि	चेन्नई
81	एस.वी. हजारे	वे.स.–।	यवतमाल	मुम्बई
82	ए.एस. सूर्य प्रभा	वे.स.–।	टीपी गुड्म	हैदराबाद

निगम अपने ग्राहकों के उज्ज्वल एवं समृद्ध भविष्य के लिए समर्पित

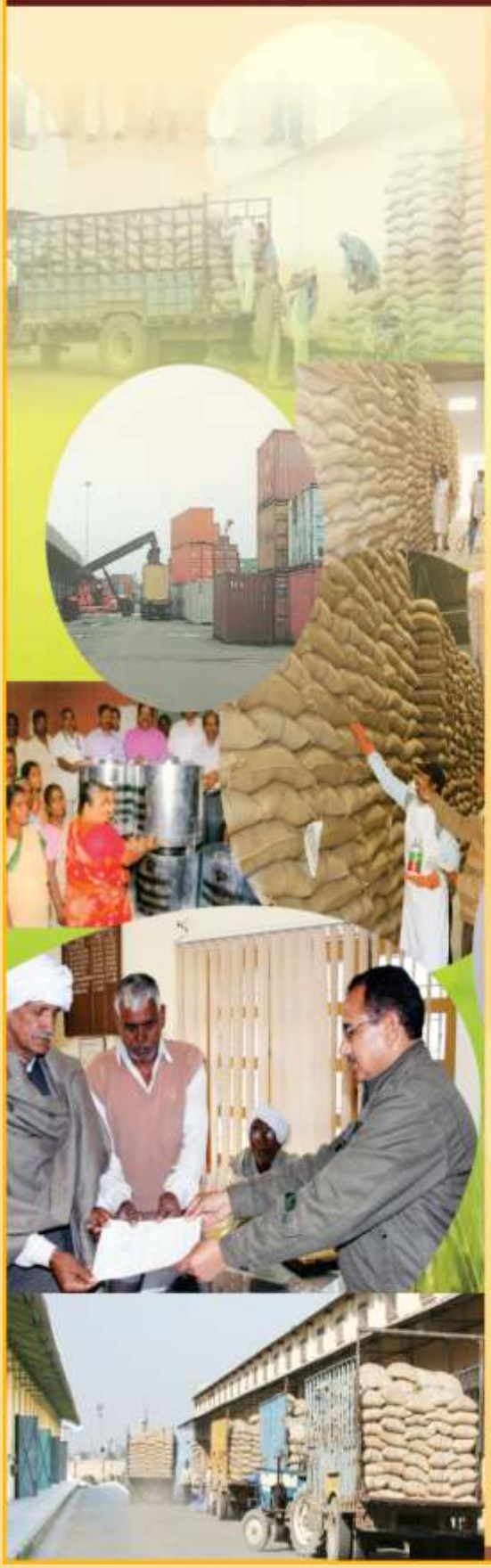

- केन्द्रीय भण्डारण निगम, भारत सरकार का अनुसूची–'क' मिनी रत्न श्रेणी उपक्रम।
- पूरे देश मे 11.7 मिलियन मी0 टन क्षमता के 474 वेअरहाउसों का नेटवर्क ।
- खाद्यान्न, बीज, उर्वरकों आदि सहित लगभग 400 वस्तुओं के लिए वैज्ञानिक भण्डारण की सुविधाएं प्रदान करना।
- वेअरहाउस रसीद को गिरवी रख कर किसानों को ऋण सुविधा के लिए सहायता प्रदान करना।
- जमाकर्ताओं द्वारा आवश्यकता पड़ने पर रख–रखाव एवं परिवहन सुविधाओं की व्यवस्था करना।
- लाखों निर्यातकों तथा आयातकों के लिए 31 कंटेनर फ्रेट स्टेशन/अंन्तर्देशीय क्लिअरेंस डिपुओं का परिचालन।
- ग्राहकों के परिसरों में पैस्ट नियंत्रण सेवा उपलब्ध कराना।
- बन्दरगाहों तथा अन्तर्देशीय स्टेशनों पर अपने 57 बाण्डेड वेअरहाउसों में बांडेड वेअरहाउसिंग सुविधाएं प्रदान करना।
- लोनी तथा गेटवे बन्दरगाहों के बीच कंटेनर रेलगाड़ियों का परिचालन।
- एकीकृत चैक पोस्ट टर्मिनल–आयात–निर्यात व्यापार के लिए सड़क मार्ग के माध्यम से भारत–बंगलादेश सीमा पर पैट्रापोल तथा भारत–पाकिस्तान सीमा पर अटारी में ट्रक परिचालन।

केन्द्रीय भण्डारण निगम

(भारत सरकार का उपक्रम)

कॉरपोरेट कार्यालय:
4/1, सीरी इंस्टीट्यूशनल एरिया, अगस्त क्रांति मार्ग, (खेल गांव मार्ग),
हौजखास, नई दिल्ली-110 016
टेलीफोन नं: 26566107, 26967712 फैक्स: 26518031, 26967712
E-mail: warehouse@nic.in website: www.cewacor.nic.in

क्षेत्रीय कार्यालय:
अहमदाबाद, बंगलौर, भोपाल, भुवनेश्वर,
चण्डीगढ़, चेन्नई, दिल्ली, गुवाहाटी, हैदराबाद,
जयपुर, कोचि, कोलकाता, लखनऊ, मुम्बई,
नवी मुम्बई, पंचकुला, पटना, रायपुर.

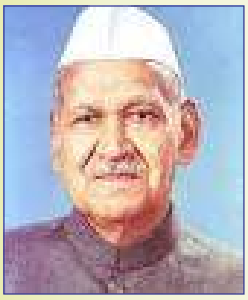

मैं हिन्दी भाषा के कार्य को किसी भाषा की ही सेवा नहीं, बल्कि राष्ट्र की सेवा का काम मानता हूं।

– डॉ. शंकर दयाल शर्मा

देश के सबसे बड़े भू-भाग में बोली जाने वाली हिन्दी ही राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है।

– नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

मैं यह सोच भी नहीं सकता कि भविष्य के भारत में शिक्षा का मुख्य माध्यम अंग्रेजी हो सकती है, वह माध्यम तो हिन्दी ही हो सकती है और या कुछ अन्य क्षेत्रीय भाषाएं ।

– पं. जवाहर लाल नेहरू

हिन्दी अपने गुणों से देश की राष्ट्रभाषा है।

– लाल बहादुर शास्त्री

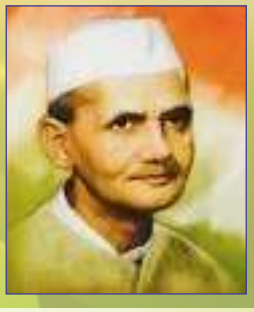

मैं यह दावे के साथ कहता हूं कि हिन्दी के बिना हमारा काम नहीं चल सकता।

– बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय

केन्द्रीय भण्डारण निगम
(भारत सरकार का उपक्रम)
4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रान्ति मार्ग, हौज खास,
नई दिल्ली-110016